

केनरा बैंक की  
द्विमासिक गृह पत्रिका  
अक्टूबर - नवम्बर 2020 | 273



# श्रेयस Shreyas

Canara Bank's  
Bimonthly House Magazine  
October - November 2020 | 273

# 115<sup>th</sup>

संस्थापक दिवस  
FOUNDER'S DAY



श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै  
Sri Ammembal Subba Rao Pai



स्थापना सिद्धांत - सफलता के स्तंभ  
*Founding Principles - The pillars to Success*

To remove  
superstition

To spread  
education

To inculcate the  
habit of thrift

To become  
financial & social  
heart

To develop a  
concern for fellow  
human beings

To work with  
sense of service

To assist  
the needy



श्री एल वी प्रभाकर, प्रबंधक निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी को दिनांक 17.11.2020 के उनके एकीकृत कोष विभाग के दौरे के दौरान श्री जी वी प्रभु, मुख्य महा प्रबंधक द्वारा स्वागत करते हुए।

Sri L V Prabhakar, MD & CEO is being welcomed by Sri G V Prabhu, CGM on his visit to Integrated Treasury Wing, Mumbai on 17.11.2020.



श्री एल वी प्रभाकर, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा दिनांक 17.11.2020 को अंचल कार्यालय, मुम्बई के दौरे के दौरान कार्यालय के कार्यपालकों से विचार- विमर्श करते हुए; श्री पी संतोष, मुख्य महा प्रबंधक भी दिखाई दे रहे हैं।

Sri L V Prabhakar, MD & CEO interacting with Executives of CO, on his visit to CO, Mumbai on 17.11.2020. Sri P Santosh CGM is also seen.

केनरा बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



Canara Bank  
(A Government of India Undertaking)

श्रेयस - SHREYAS

SINCE 1974

केनरा बैंक की द्विमासिक गृह-पत्रिका  
Bimonthly House Journal of Canara Bank

अक्टूबर - नवम्बर 2020 | 273 / October - November 2020 | 273

### ADVISORY COMMITTEE

L V Prabhakar  
M V Rao  
L V R Prasad  
V Ramachandra  
R Girees Kumar  
Shankar S  
M K Ravikrishnan  
H M Basavaraja  
Y L Bhaskar  
Kishore Thampi  
Ohm Prakash Sah

### EDITOR

Kishore Thampi

### ASST. EDITORS

Sajeev K  
Awanikant Singh

सह संपादक (हिंदी)  
श्री ओम प्रकाश साह

### Edited & Published by

Kishore Thampi

Senior Manager

House Magazine & Library Section  
HR Wing, HO, Bengaluru - 560 002.

Ph : 080-2223 3480

E-mail : hohml@canarabank.com  
for and on behalf of Canara Bank

### Design & Print by

Blustream Printing India (P). Ltd.

#1, 2nd Cross, CKC Gardens,

Lalbagh Road Cross, Bangalore - 560 008.

Ph : 080-2223 0070 / 2223 0006.

The views and opinions expressed herein are not necessarily those of the Bank. Reproduction of the matter in any manner with the permission of the editor only. For private circulation only. Not for Sale.



श्रेयश्च प्रेयश्च मनुश्यमेत स्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः//  
(कठोपनिषद् II - 2)

Both good and pleasant approach us:

The wise on examining choose the good. (Kathopanishad II - 2)

### CONTENTS

- 2 प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश / MD & CEO's Message
- 3 संपादकीय / Editorial
- 5 New Chief General Manager's Message
- 6 New General Managers' Message
- 7 Relevance of Founding Principles - H M Basavaraja
- 11 Self Belief & Success- Kishore Thampi
- 13 Sports & Society- P Srinivasamurthy
- 15 Banking Odyssey Quiz
- 16 अ→अम्मोम्बाल सुब्बा राव पै क→केनरा + ब→बैंक=केनरा बैंक - षोजो लोबा
- 19 Legal Column
- 20 Econ speak
- 22 Banking News
- 24 Interview - Ms Shantha Rangaswamy
- 26 Founder's day Celebration at Circle Offices
- 28 Founder's day Celebration at Head Office
- 30 Circle News
- 34 The Founding Principles that binds us.... - Abhijith N Rao
- 36 मानव-हितैषी श्री अम्मोम्बाल सुब्बाराव पै - बी के उप्रेती
- 40 अंचल समाचार
- 43 Why Canara Bank is a success story? - K.P. Ramesh Rao
- 44 मौन की शक्ति - पूनम गुलाटी
- 45 Cartoon
- 46 वैश्वीकरण और राजभाषा हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं का भविष्य - अनीता रैलन
- 51 एम्स की यादें - दिल्ली - अमित कुमार
- 54 Homage
- 56 Book Review



## प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश



## MD & CEO's Message

प्रिय केनराइट्स,

वर्ष 2020 ने हमारे लिए कई चुनौतियां खड़ी की हैं। मौजूदा महामारी के रूप में प्रकृति के कोप से जूझते हुए अनिश्चितताओं और आश्चर्य से भरी इस अस्थिर अर्थव्यवस्था में स्वयं को स्थिर बनाए रखने से हमारे आगे बढ़ने के जज्बे को और हौसला मिला है। अंततः इसका परिणाम यह रहा कि हमने विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में स्वयं को बचाए रखना सीख लिया है। एक लोकप्रिय कहावत है, “प्रतिकूल परिस्थितियों की पराकाष्ठा उनको सामान्य बना देती है” यानी जब विपरीत परिस्थितियां अपने चरम पर हों तो मजबूत और प्रतिबद्ध लोग उनसे निपटने का रास्ता ढूंढ ही लेते हैं। यह कहीं न कहीं लचीलेपन और धैर्य की भावना का परिचायक है, जिसे पिछले कुछ महीनों में सभी केनराइट्स ने दिखाया है, महामारी की शुरुआत से ही, संगठन को सर्वोपरि रखते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए दृढ़ता के साथ वो लगातार प्रयास कर रहे हैं। मुझे आप सभी पर गर्व है और हमने दुनिया को दिखा दिया है कि हमारा आदर्श वाक्य “टुगेदर वी कैन” सही मायने में हमारे इरादों को चरितार्थ करता है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि इन इम्तिहान की घड़ियों के दौरान हमारे ग्राहकों ने साथ खड़े रहकर हमारा समर्थन किया। हमारे दूसरी तिमाही के आंकड़े हमारे विकास प्रक्षेपवक्र का प्रतिबिंब हैं, जो कि काफी आशाजनक हैं। हमने कासा शेयर (डोमेस्टिक कासा-32.77%) और खुदरा मीयादी जमा (18.14% वर्ष दर वर्ष) को बढ़ाकर मूर्त रूप देते हुए देयता पक्ष पर अच्छा काम किया है। हमारी एनआईआई और शुल्क आधारित आय में भी काफी प्रगति हुई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से 90%से अधिक बैंकिंग लेनदेन के साथ तकनीकी पहलें अब फलित हो रही हैं। हमारी प्रमुख चुनौतियां एनपीए प्रबंधन, साख निगरानी व वसूली और पुनर्गठन प्रयासों को मजबूत करने, नई गिरावट को रोकने और सबसे महत्वपूर्ण खुदरा, कृषि, एमएसएमई और कॉर्पोरेट क्रेडिट के उचित मिश्रण के साथ अग्रिम पोर्टफोलियो में एक संतुलित और स्थिर विकास को बनाए रखने में है। हमारी इस उर्जावानटीम के

Dear Canarites,

The year 2020 has posed many challenges to us. Battling nature's wrath and co-habiting with the current pandemic and staying afloat in a volatile economy fraught with uncertainties and surprises has emboldened our spirits. The end result is that we have learnt to survive under extreme and trying circumstances. There is a popular adage, “when the going gets tough, the tough gets going”, which connotes as when the situation becomes difficult, strong and committed people step up to handle it. This more or less epitomises the spirit of resilience and endurance that all Canarites have shown in the past few months, ever since the onset of the pandemic, by putting the organisation above everything else and striving persistently and relentlessly for a brighter tomorrow. I am proud of each and every one of you and we have shown the world what our motto “Together We Can” truly signifies.

It goes without saying that during these testing times our customers have stood by us and supported. Our Q2 figures, which is a reflection of our growth trajectory, looks fairly promising. We have done well on the liability side by making tangible forays into increasing the CASA share (Domestic CASA – 32.77%) and Retail Term Deposits (18.14% increase Y-o-Y). Our NII and fee based income has also shown considerable progress. Technological initiatives are bearing fruits with over 90% of banking transactions now done through digital platforms. Our key challenges lie in the areas of NPA Management, strengthening Credit Monitoring & Recovery and Restructuring efforts, arresting fresh slippages and most importantly maintaining a balanced and steady growth in Advances portfolio with proper mix of Retail, Agri, MSME and Corporate Credit. With a



साथ, मुझे विश्वास है कि चुनौती कोई भी हो हम उन्हें पार कर सकते हैं और आने वाली तिमाहियों में उत्साहजनक प्रगति दिखा सकते हैं। इसके अलावा, हमने विभिन्न बैंकिंग क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को उपयुक्त रूप से सम्मानित करने के लिए “पुरस्कार और मान्यता” कार्यक्रम भी पेश किया है।

अक्सर यह कहा जाता है कि कुछ करने के लिए हमें सबसे पहले वास्तव में उस पर विश्वास करने की जरूरत होती है। जब हमारे प्रिय संस्थापक, श्री अम्मम्बाल सुब्बा राव पै ने 1906 में इस महान संस्था की नींव रखी, तो उन्हें दृढ़ विश्वास था, कि वे समाज के जरूरतमंदों तथा दबे-कुचले व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं और तेजी से बढ़ती ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सही गति प्रदान कर सकते हैं।

अपने जीवन और समय से कहीं आगे देखते हुए श्री अम्मम्बाल सुब्बा राव पै जैसे दूरदृष्ट ने अपनी स्वयं की एक दुनिया बनाई, एक ऐसी संस्था जिसमें अभी भी उनकी आभा झलकती है और लगातार अपने प्रतिभाशाली और प्रतिबद्ध कर्मचारियों के माध्यम से शुभ्रता रूपी चमक का उत्सर्जन करती रहती है जो अनंत काल तक लगातार करती रहेगी।

जैसा कि हम 19 नवंबर को अपना “संस्थापक दिवस” मनाते हैं, आइए हम इस महान संस्था को बनाए रखने वाले मूल्यों, संस्कृति, लोकाचार और सिद्धांतों के लिए खुद को फिर से समर्पित करें और भविष्य में इसकी बेहतरी, शक्ति और गौरव की दिशा में काम करें। आइए, हम सहृदय यह विश्वास करें कि यह संस्था जो हमारे प्रिय संस्थापक की छाया में बड़ी है वह अब सुरक्षित और सक्षम हाथों में है और तेजी से प्रतिस्पर्धी होते जा रहे इस संगठनात्मक परिदृश्य में हम इसे सुरक्षित व संरक्षित रखते हुए उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर पर ले जाने के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयास करेंगे।

इस वित्तीय वर्ष की समाप्ति से 4 महीने पहले, मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपने सर्वोत्तम प्रयासों को बढ़ाएं, वार्षिक लक्ष्यों और चुनौतियों को पार करने के लिए उत्साह के साथ काम करें और अपनी प्रतिभा और सफलता की चमक से अपने कार्य क्षेत्र को रौशन करें।

“आप सभी को शुभकामनाएँ”

भवदीय,

एल वी प्रभाकर

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

vibrant team like ours, I have the confidence that no challenge is big enough for us and we can surpass them and show encouraging progress in the coming quarters. Further we have also introduced the “Rewards & Recognition” programme to suitably acknowledge the best performers in various banking disciplines.

It is often said that for something to happen we first need to truly believe in it. When our beloved founder, Sri. Ammembal Subba Rao Pai, sowed the seeds for this great institution way back in 1906 he had a strong conviction, a strong belief that he can bring about a transformation in the society, in the lives of the needy and the downtrodden and in providing the right impetus to a burgeoning rural economy. A visionary far ahead of his life and times, Sri. Ammembal Subba Rao Pai created a world of its own, an institution that still exudes his aura and continues to emanate radiance through its talented and committed individuals and will so till perpetuity.

As we celebrate our “Founder’s Day” on 19th November, let us rededicate ourselves to the values, culture, ethos and doctrines that uphold this great institution and work towards its betterment, might and glory in the days to come. Let us wholeheartedly believe that the institution which grew in the shadow of our beloved founder is now in safe and competent hands and we will put forth our best efforts to safeguard it, protect it and take it to the higher pedestals of excellence in an organisational landscape that is becoming increasingly competitive.

With only 4 months remaining in this FY, I urge each and every one of you to put your best efforts forward, work with zest to surpass the year end goals and challenges and scintillate your work arena with flashes of your brilliance and success.

*“Wish you all the very best”*

With warm regards,

Yours sincerely

L V Prabhakar  
MD & CEO



## संपादकीय



## Editorial

अक्सर कहा जाता है कि “महानता कोई मंजिल नहीं है अपितु कभी समाप्त नहीं होनेवाली एक सतत यात्रा है”। 19 नवंबर को बैंकिंग उद्योग के महानतम दूरदर्शियों में से एक एवं बहुविध प्रतिभाओं के धनी हमारे प्रिय संस्थापक, श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै जी की जयंती है। बल्कि उनकी महानता गरीबों के उत्थान के लिए उनके अथक प्रयास और समाज को त्रस्त करने वाली कुरीतियों को दूर करने का साहस में है, जो कि उनके जैसे अद्भुत क्षमता वाले व्यक्ति ही हासिल कर सकते हैं। उनकी यही विनम्रता उनके महानता की परिचायक है, प्रबुद्ध तथा विद्वान होने के कारण उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त था और उनमें अद्वितीय बुद्धि क्षमता थी। संभवतः 1900 के दशक की शुरुआत में जो मात्र एक विचार के रूप में उभरकर सामने आई वह इस महान संस्था के रूप में आज भी संस्थापक सिद्धांतों को बरकरार रखे हुए है। हमारा बैंक, जो एक संस्था के रूप में उनके संरक्षण में विकसित हुआ, आज वह देश के सार्वजनिक क्षेत्र का चौथा सबसे बड़ा बैंक है। उनकी महानता का भाव अब भी हम सबके रग-रग में प्रवाहित हो रहा है। संस्थापक दिवस समारोह उस महान व्यक्ति के प्रति हमारा सम्मान है जो जाति / पंथ और सामाजिक भेदभाव की असमानताओं से ऊपर उठकर समर्पण, करुणा और सक्षमता से बंधे एक अद्वितीय समाज का निर्माण करने के लिए आगे बढ़े।

श्रेयस का यह “संस्थापक दिवस विशेषांक” संस्थापक सिद्धांतों के अंतर्निहित सार को समझकर एक बैंकर और एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में हमारी धारणाओं और विश्वासों को कैसे साकार करता है तथा हमारा विश्वास संगठनात्मक मूल्यों और लोकाचार के साथ मिलकर सफलता की अलिखित कहानी कैसे यथार्थ में परिणत हो जाता है पर संकल्पित किया गया है।

आशा है कि आप इस विशेषांक को पढ़ने का आनंद लेंगे। आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव का हमें इंतजार रहेगा। कृपया अपनी प्रतिक्रिया / टिप्पणी हमें [hohml@canarabank.com](mailto:hohml@canarabank.com) पर भेजें या हमें 080 – 22233480 / 9986693808 पर फोन करें।

किशोर तम्पी  
संपादक

It is often said that “Greatness is not a destination; it is a continuous journey that never ends”. 19th November marks the birth anniversary of one of the greatest visionaries that the banking industry has ever seen. Our beloved founder, Sri. Ammembal Subba Rao Pai, was a man of multifarious talents. But his greatness lay in his humility, his relentless efforts to uplift the poor and iron out the deprecating stigmas that plagued the society, a feat only people with certain caliber could achieve. Erudite and scholarly, he had a high standing in the society and possessed an intellect unparalleled during those times. What probably started as a mere thought during the early 1900s has materialised in the form of this great institution that still upholds the doctrines of the founding principles. The institution, our Bank, which grew under his tutelage is now the 4th largest Public Sector Bank in the country. The essence of his greatness is now coursing through the veins of each and every one of us. The founder's day celebration is a notion of reverence to that great individual who had risen above the inequities of caste/ creed and societal discrimination and went on to create a unique realm bounded by the strictures of dedication, compassion and competence.

This “**Founder’s Day**” **Special Edition** of Shreyas has been conceptualised to beget the quintessence of these underlying founding principles and how it shaped and concretized our perceptions and beliefs, as a banker and a responsible individual and also bringing forth how the unwritten element of success materialise when our own belief systems coalesce with organisational values and ethos.

Hope you enjoy reading this special edition. As we love to hear from you, please drop in your feedback / comments to [hohml@canarabank.com](mailto:hohml@canarabank.com) or call us at 080 – 22233480 / 9986693808.

Kishore Thampi  
Editor

I feel immensely honored on my elevation to the post of Chief General Manager in our esteemed organization. I attribute my success to my superiors who have guided and supported me in my entire career, at every stage. My superiors have been a pillar of strength to me and have brought out the best in me, in discharging my duties which has enabled me to give the best to the organization and the organization in turn has recognized and showered me with this elevated position.



With the power comes the responsibility. I take this elevation as an opportunity to further enhance and utilize my abilities to accelerate the growth of our organization.

I am very grateful to the trust and confidence deposed on me by my top management. I assure to continue to render the best services, along with my team, in achieving the organizational goals set.

I express my special regards to all my well-wishers, colleagues and family members, who have been with me in my journey and supported me throughout.

With best wishes and regards,

**S Ravindran**  
Chief General Manager

You can never cross the ocean  
until you have the courage to  
lose sight of the shore.

Christopher  
Columbus



It is indeed a matter of pride and privilege for me to be elevated as General Manager in our esteemed Bank. I take this opportunity to express my sincere thanks and gratitude to all my seniors for having faith in me and for their constant encouragement, support and guidance to enable me to reach this coveted position. I also thank whole-heartedly all my well-wishers, fellow colleagues and my whole family for their unstinted support throughout my career.

The entire world today is passing through an unprecedented crisis due to COVID – 19 and its implication is highly visible in the banking sector. With severe restrictions related to social distancing in place, we need to rethink our strategy in order to be more effective and customer friendly in these difficult times. There lies an opportunity in each crisis; COVID-19 also could be a game changer, pushing banks for digital technology. Since both urban and rural India have high mobile penetration and access to data, we should focus more towards digital transformation.

After amalgamation our Bank has become the 4th largest Public Sector Bank in the country and we have the huge responsibility to maintain its rich traditions and culture and grow more to become the most competitive, popular and formidable bank creating wealth for all its stakeholders and contributing in Indian economy becoming 5 trillion dollars.

Knowledge gap among newly recruited employees is another challenge to be addressed quickly. All seniors should share their experience and hand-hold the youngsters in enriching their knowledge and improving their skills. These youngsters are the key for digital transformation across all delivery channels and to take our Bank to greater heights.

I thank 'Shreyas' for giving me this opportunity to share my views.

With best wishes and Warm Regards.

**Hitesh Chander Goel**

General Manager



I take this opportunity to share my experiences and feelings on my elevation as General Manager of our beloved Bank. It is a long journey of 30 years for me starting as Clerk in Syndicate Bank to becoming GM of Canara Bank.

After completion of ICWA, I got my first promotion as Officer in 1999. Thereafter I was promoted to higher scales at regular intervals. I feel extremely grateful to the management for reposing confidence in my abilities at every stage. I should specially mention the support and guidance I have received from my superiors, peers and subordinates during these years which helped me to aspire for and achieve higher positions in the Bank. Today I am proud to be a part of the top management of the 4th largest Public Sector Bank after amalgamation of two great institutions viz. Syndicate Bank and Canara Bank.

We have witnessed massive transformation in Banking Industry during the last two decades which prompted us to sharpen our skills and learn new skills just to be in the race. Though these are challenging times, our Bank has successfully sailed through to be the 4th largest among all PSBs. However, it is not the time to relax as tougher times are ahead. We need to toil hard even to maintain our present position among the big league banks. We need to improve our profitability, productivity and volume of business to consolidate our position. Let us gear up and give our best to keep our flag high. I am sure that "Together We Can".

With best wishes and warm regards.

**T K Venugopal**

General Manager





## Relevance of Founding Principles of Our bank in the past, present and future



**H M Basavaraja**

DGM,  
HR Wing, Head Office

Our great visionary, Sri Ammembal Subba Rao Pai, founded our Bank with strong founding principles which have relevance in any period irrespective of any society. The imbibed values are the stirring factor for every Canarite to excel in the arena of banking. The words of the great man, who paved the way for this institution in 1906 with boundless concern for the fellow human beings as he was much exercised in mind as to how he could assist the small traders who were charged exorbitant rate by the moneylenders, assume great importance even today. When we remember our founder on the 115th foundation year, the founding principles of our Bank, which are the strong pillars on which the organisation is built, have to be cherished and understood in true spirit by each one of us as a guiding source towards the fulfilment of our organisation goals.

### To remove Superstition and ignorance.

Ignorance was the main cause of superstition and other irrational beliefs that prevailed in the 19th and 20th century. Superstitions are man-made customs. From earlier times until today, even some of the educated people believe in superstitions. Many people believe that superstitions influence events by changing the likelihood of currently possible outcomes rather than by creating new possible outcomes. It was very difficult to change the blind belief of the people, as it was part of the tradition and religion and have been passed down from one generation to another. Therefore, in order to eradicate the superstition and ignorance, the founder decided to put it as the first founding principle of the financial institution. Even after more than a century elapsed, superstition still prevails in many parts of India in various forms. Several states in India have passed acts for the Prevention and Eradication of Inhuman Evil Practices and Black Magic. This shows the significance of this principle and its universal applicability at all times. The Canara Hindu Permanent Fund, started by our founder, is tantamount to the fact that he had this great

vision to imprint in the minds of the people the significance of having a proper system for safeguarding their hard earned money and how it leads to buttressing the usual capitulating ills of the society like superstition and ignorance which the deviant minds (like money lenders) take advantage of. People who used to safeguard their money by keeping it in earthen pots, small baskets etc. started visiting banks to save their money which in turn earned more returns. Similar situations & practices, in varied forms, are still in vogue which needs to be tapped and brought back into the banking stream.



### To spread education among all.

Education leads to knowledge, knowledge is based on reason and it leads to truth. Therefore, education is the only remedy to remove ignorance, which is the root cause of superstition. Our founder believed that education was the key to social and economic uplift. Gender, class, religion etc. have always influenced education and at a time when education for women was bizarre, he founded a school for girls. Canara Girls' School and Canara High school started by him expresses the importance he gave for education. Education is a

continual process and it never stops. At the beginning of the bank, in the early years, the education was limited to a few and more than 90% of the population was illiterate. There was a necessity to educate the people to emancipate them from the clutches of the grasping moneylenders. Though more than 70% of the population are literate in India now, there is a need of financial literacy. Even the professionals, though expert in their own field, lack financial awareness. Bank has a major role to play in this area. Canara Bank is one the pioneers in the field of facilitating education, in all forms, to millions of people across the hinterland. Our founder consciously believed that educating a woman in a family is equivalent to educating the whole family. Even today many girls are deprived of this facility and a lot needs to be done in this regard. Our Bank still continues to spread education, the inception and establishment of CBJEF is carrying forward this legacy.

It goes without saying that the seeds sown by our great founder a century ago is still bearing fruits through our varied initiatives in making education easily accessible to the masses and helping them to gravitate closer towards their dreams and aspirations.



#### **Inculcate the habit of thrift and savings.**

There was an age-old custom among the Gowd Saraswat Brahmin community, particularly on occasions like birth of a child, to deposit a certain sum of money with certain highly respectable and wealthy persons with the understanding that the same would be repaid when the child attained majority. The money deposited did not carry any interest and there was a long span of 18 years to receive the money back. There used to be conflicts where there was no written understanding. This is also one of the reasons that prompted our founder to start a

bank. The intention of the founder was to mobilise deposits from people thereby making a saving habit in them and make the fund available to the economic activities at a reasonable rate of interest. What an innovative idea to start a bank with a vision in mind! It is not about how much money you make, it is all about how you save it. So the importance of saving and thrift shall ever remain. There are many daily labourers who don't save for tomorrow and spend whatever they have today. The present day savings shall help everyone for a stress free life tomorrow. Our bank's initiative in providing zero balance savings account, and a host of other measures, to the needy and the downtrodden speaks volumes about the framework in which we encourage people to inculcate the habit of saving for the future and in developing themselves and the society in which they live in. The idea of "thrift & savings" floated by our beloved founder is still relevant as the present blueprint of our bank's financial literacy and inclusion is premised on this immaculate founding principle.



**To transform the financial institution not only as the financial heart of the community but the social heart as well.**

Banking today has undergone a metamorphosis from the time it began. The manual system of book keeping has changed to more sophisticated computer based systems and procedures. The promoters of our bank at the time of founding envisaged transforming the financial institution as the financial heart as well as the social heart of the community. Financial heart pumps the economy moving forward, with an open heart to the needs and requirement of the common people, the social heart pumps a stream of happiness in them. Sri. Ammembal Subba Rao Pai was not just a banker, but he was also a friend, philosopher and guide to all the

people in the community. Banking to him was not just about profits, but something way beyond that, in developing a concern for humanity and fellow human beings. We have come a long way treading the path which many great leaders have traipsed. The bank has grown in stature and size and is one of the top most banks in country as a whole. The recent amalgamation (of Syndicate Bank with our bank) has brought us ample of opportunities to exhibit the spirit of togetherness to our brethren and the people whom we associate with. The excellent service rendered by the men and women of our Bank is rightfully winning the hearts of our customers. There are many more miles to go and together, as a well-knit team, let us undertake this journey changing the financial landscape for the better and touching the lives of our wonderful customers.

#### To assist the needy.

One of the primary objectives for starting the Canara Hindu Permanent Fund (now Canara Bank) in 1906 was to assist the needy and to extricate the people from the clutches of poverty and societal ills. Our founder's vision was to make this great institution people's bank and will continue to be so. Today the world is passing through one of the turbulent times in the history of mankind and all of a sudden the life has turned topsy-turvy. The normal day-to-day life has been affected and global economy is slowing down. This pandemic has affected thousands of people, who are either sick or are being killed due to the spread of this disease. COVID-19 has rapidly affected businesses, slowed the pace of the manufacturing and disrupted the supply chain of products thereby bringing losses in national and international business. Our bank rose to the occasion and announced credit support for all our borrowers who were affected by the COVID-19. The Canara Credit Support was extended as a quick and hassle-free loan to overcome temporary liquidity mismatches for payment of statutory dues, salary/wages/electricity bill, rent etc. Our bank has always been in the front to assist the needy people whenever situation demanded.

The bank continues to support the disadvantaged, marginalized and excluded with special focus on weaker and vulnerable sections of the people through our CSR activities. The vision of our founder has been the guiding principle of all our CSR activities. The target group of the activities are Small and marginal farmers, Artisans, Women and girl children, Unemployed youth and school



drop outs, Differently abled people, Scheduled Caste/Tribes, Minority Community, Prisoners and ex-convicts, Victims of heinous crimes, Victims of natural and manmade calamities etc. The Bank, through its Canara Bank Centenary Rural Development Trust (CBCRDT), has established 47 exclusive training institutes, including 39 Rural Self Employment Training Institutes, 3 Artisan Training Institutes and 5 Institutes of Information Technology to promote entrepreneurship development among rural youth and encourage them to take up self-employment activities. The Bank has co-sponsored 27 Rural Development and Self Employment Training Institutes (RUDSETIs) across 17 States. Even our employees and officers association have extended service, volunteering many times to assist the needy.



#### To work with sense of service and dedication.

Sense of service and dedication are powerful entities that all growing organisations should have. The bank has survived for more than a century and will continue to grow. The exemplary performance of the bank has been attributed to the selfless service and dedication of the staff over the years. The seniors have to guide and mentor the youngsters joining today in our bank and apprise them about the values and culture of the organisation to make them understand our bank better. Today we are 90,000 plus and are increasingly becoming a young bank day by day. Our biggest achievement at this juncture could be in the successful integration of these young minds with our organisational culture, ethos and





## Self Belief & Success



**Kishore Thampi,**

Senior Manager  
HM&L Section

The month of November is very special to all Canara Bank men and women. Our beloved founder, Sri. Ammembal Subba Rao Pai, was born on 19th November, 1852 at Mulki near Mangalore. Apart from being a legal luminary and an enterprising banker by profession, he was also an educationist, a social reformer and a philanthropist - a rare combination of intelligence and benevolence which was unheard of in those days. Being a humanist by action, our founder firmly believed that education was the perfect panacea to the ubiquitous ills of social and economic discrimination that often ripped apart the unifying fabric of progress and prosperity. He had a strong, vivid vision to emancipate the downtrodden and his whole life was dedicated to such noble deeds. Starting with Canara High School to the Canara Hindu Permanent Fund Ltd ( now Canara Bank), our founder was always one step ahead of his time in matters relating to empowering the community and developing a self reliant model for sustenance and growth. His relentless efforts paid off and the dream of creating an institution premised on social responsibilities took shape during the early 1900s with the inception of this great institution, a humungous financial Banyan tree with deep rooted values and doctrines, that now provides livelihood to around 90,000 employees and banking assistance to over 13 crore people across the globe. The walls of the corporate office still reverberate with the dictum of our beloved founder – “Focus on your goals and profits will follow”.

All great things always start as a mere thought... a conviction, a vision, a calling to do something that you consciously believe in. Sometimes the difference in whether you succeed or not boil down to one simple thing – self belief. The gift to recognise your ability to accomplish your chosen dreams and goals can be that

effulgent fleck in the spectrum of your life. When you start believing in yourself, you consciously will start making those requisite changes to your life to align yourself with your life's mission and vision, a trait that arguably augments you from the levels of mediocrity to the higher pedestals of greatness.

Aligning yourself with your life's mission and vision requires certain strictures, a framework which can be used as a stepping stone to tread forward. We, as Canara Bank men and women, have the founding principles to act as a beacon of light that cuts through the nebulous haze of ambiguity and uncertainty. The 7 principles quite immaculately touches upon the finer aspects that an organisation should focus on ,not only to become the financial heart of the community but also to help in every possible way to improve the economic conditions of the common people (as quoted by our beloved founder). The prominence of these founding principles is such that it can be easily extrapolated to fit into our lives to make it our guiding principles. It is common knowledge that an organisation is a sum total of all its employees, their acuity and every individual's perception matters. It is at such instances that we bow before our beloved founder and the fore-bearers who had the farsightedness and astuteness to conceptualise a set of standards (founding principles) for the people to follow and seek guidance from, as a reference point, as a pointer towards unity and progress.

Consistent and steady progress is no joke and it takes a lot to instill that sense of confidence and self belief to overcome the hurdles and obstacles that life posits. But the good thing about such testing circumstances is that it always gives us the courage to improve ourselves, the situation and the world that we live in. Through these



challenges we become stronger and stronger as they are often the breeding ground for growth and development. The stronger and more confident we become, the more we gravitate closer towards that elusive success. I would like to quote a Zen story which promulgates the profundity of how self belief leads to success. The story goes like this ....

In the early days of the Meiji era (era of Japanese history from 1868 to 1912) there lived a well known wrestler by the name O-nami "Great Waves". He was immensely strong and was well versed with his craft to the extent that he could even defeat his own teacher ...but only in private bouts. In public even his own pupils could defeat him. O-nami sought the help of a Zen master in getting him out of this misery. The Zen master advised "Great Waves is your name. Stay tonight in this temple and imagine that you are those billows. You are no longer the wrestler who is afraid but those huge waves sweeping everything before them and swallowing all in their path". O-nami sat in meditation throughout the night and he gradually turned more and more to the feeling of waves. It is said that as night progressed he became that huge wave sweeping through everything and anything in its path. When dawn broke through the Zen master returned to find nothing (not even the temple) but the ebb and flow of an immense sea and amidst that O-nami in deep meditation.



The master smiled at him, patted him and said, "Now nothing can disturb you as you have become those mighty waves gobbling everything in its path". The story goes on to reveal that from that day onwards O-nami was undefeatable, winning every contest held privately as well as publicly. He had truly overcome his fear and self-doubt. We also need to become like O-nami, rising above the inequities of life and personal misgivings, becoming a huge wave by working together with synergy and congruence and sweeping past the operational and work place challenges with panache.

The founder's day celebration in our bank, as homage to our beloved founder Sri. Amembal Subba Rao pai, is a phenomenon which is unique to the banking industry. Its uniqueness lies in the fact that an organization consecrates that particular day to reminisce about a great visionary and leader, whose values and ideals propagated more than a century ago is still relevant and significant in the current scenario and also under whose shadow this mighty institution has grown in stature and size. It is a day for introspection, to re-align ourselves with the organizational values and ethos and move forward together towards a magnificent future. No one can stop us when together we become that all engulfing wave – strong, resilient and progressive and stopping at nothing other than our goals and objectives.





# Sports & Society



**P Srinivasamurthy,**  
Manager,  
Sports cell,  
HR Wing, HO

19th November of every year is celebrated in the Bank as “Founder's Day”. Late Shri Ammembal Subba Rao Pai, our beloved founder was one of the few persons who just didn't see things as it is, but saw how it can be. In simple words, he was a Visionary par excellence. People have sight in their eyes, he had a vision. His thoughts, actions, initiatives were way ahead of his times and were path breaking for many. He started an exclusive school for Girls, which was unheard off in India in those days. He started our beloved Bank with the sole purpose of serving the society and in the process make profit. All founding principles propagated by him clearly epitomizes his thoughts. The founding principles set and followed since 1906 is very relevant even today and in fact, these are timeless facts. A business cannot survive if it doesn't serve the society. In other words, every business has to align its activities to make itself useful to the society. Then and only then can it survive and thrive. Canara Bank is a classic example of this.

One of the 7 founding principles of our Bank is **“To transform the financial institution not only as the financial heart of the community but the social heart as well”**.

Being a Sports person, I cannot help but think that the same principle holds good for the survival of Sports also. Sports has been there in the society for times immemorial for the simple reason that the society considered it essential and very relevant. Through this article, I am trying to decipher as to why Sports is a very integral part of our society since ages despite being a non-essential / non-mandatory profession.

Mankind has found Sports as integral part of society and the ancient Olympic Games were held from 8th century BC to the 4th Century AD. The modern Olympic Games first started in 1896 at Athens. In ancient times Sports was primarily considered as a mode of entertainment. The thrills and spills of the game kept the audience

riveted and the unscripted finishes thrilled the audience to no end. Outstanding Sports persons became persons of significance and importance in the society. Initially, sports meant physical fights and it was all brawn with very little brain/skill set or equipments. As such, most of the sports persons exhibited great physical strength and were employed / deployed as body guards of the Kings / King makers / VVIPs. They also found employment in the army or armed forces considering their fighting skills.

Initially Sports was restricted to a Region / country and competitions were held within the region/country. With the expansion of empire by the Romans, Greeks and British, Sports evolved to Inter-region / International. Sports persons were viewed as Brand ambassadors of the Nation.

With the advent of modern Olympics in 1896, Sports became much more than pure entertainment and it was viewed as a mode to make your country well known and popular across the world. It also became a matter of pride to win at Olympics. So countries started investing in Sports and Sports persons to ensure a better performance from their team / contingent.

It was also observed that the sports brought entire



nation together while cheering for their team / athletes, irrespective of caste, creed or financial status. Sports is now being viewed as a tool for nation building. Sports has become a unifier of people, as there is no status or differentiation amongst players / Athletes in sports. Skill and Talent are the only criteria for success and people with skill and talent are identified and trained to win medals for their countries at Olympics / other World stage events. Initially Sports faced challenges due to unfavorable climatic conditions and shortage of skilled Sports persons.

Hosting of Olympic games / World cup games became very big and multiple countries started bidding for hosting these prestigious events. By playing host, the host country is able to showcase its country, culture, ethics, practices, arts to the world and this helped in other trade and businesses in general and tourism in particular. So hosting a World class sporting event is being viewed as an opportunity to grow businesses and nations.

With the advancement in transportation systems, Electric, electronics and Information technology, humans are engaged in less and less physical activities and are found unfit and unhealthy when compared to their ancestors. Men (without any gender bias) start to do all his work sitting in the comforts of home or office and with very little physical activities. The invention of Smart Phones has made man almost immobile as he is able to do all his day today activities with his finger tips. This has made people obese which has led to many life style diseases like Hyper tension, Diabetes etc. In addition to this, Mental health / depression is becoming a menace not only amongst adults but also amongst teenagers.

Hence, today, Sports has become an essential field in any nation's growth. A nation is healthy only when its citizens are healthy and Sports promotes health and fitness. In addition to this, Sports also teaches the following:

How to handle defeats / failures?, How to Celebrate Victories / Success?, Leadership Skills, How to play for the team and be flexible to work / play for the team's cause? How to perform as a Team?, How to plan, prepare and strategize?, How to comeback from defeats?,

Discipline, Personality, Communication Skills ... to name a few.

Seeing the role played by the Sport in the development of Society, it is now viewed as an industry and the global sports market reached a value of nearly \$488.5 billion in 2018 and is expected to reach nearly \$614.1 billion by 2022.

India also realized the significance of Sports to its society and hosted its first big world event "The Asian Games" in 1982 and the Commonwealth games in 2010. India also hosted the Cricket World Cups in 1987, 1996, 2011, & 2016. This gave impetus to Indian Sports and Sports persons, as India had to build world class sports infrastructure to host such big events. Indian Sports saw a paradigm shift in 2008 when the first Indian Premier League was held. For the first time, Sportsmen in India were bought in auction through bidding process and Sports became more of a profession. The success of IPL gave birth to Premier / professional Leagues like Pro Kabaddi League, Indian Soccer League, Premier Badminton League etc. Sports persons are being used as Brand Ambassadors for marketing many products / services and they are treated as Celebrities. One can confidently say today that Sports in India is an Industry and can be pursued as a profession for life. India being a young nation (1/4th of Indian population is aged between 15-29) has realized that Sports is the way forward to create a better quality of life for its citizens.



Indian Govt. itself started the "KHELO INDIA", in 2018, the biggest Sporting event in the nation in terms of number of participants to create awareness about Sports and fitness amongst the youth. Competitions are held in two age categories U-17 and U-21. The best 1000



kids are given an annual scholarship of ₹5 lacs for 8 years to prepare them for International Sporting events. India is slowly but surely emerging as one of the Sporting nations in the world.

Indian Sports and fitness market reached \$3,621 Million in 2017 and is estimated to grow at a CAGR of 9% during 2019-2024.

In tune with the founding principle of contributing to the social heart of the community, our Bank has also been encouraging Sports and Sports persons from 1970s itself. Today, Bank has one of the best Sports Policy in the Banking industry. The policy provides for recruitment of outstanding sports persons, Out of Turn Promotion and Incentives for Sporting Achievements at National / International level, Practice facilities, kit, Diet allowances etc. Considering the Avg. age of our Employees, which is around 37 years, the Sports Policy also provides for conduct of annual sports competition for employees to promote good health and sportsman spirit.

As someone who has experienced and enjoyed the fruits of long associations with sports, I can say that whatever be the game that you are playing, no matter at what level, the act of sweating it out and giving your best in the sporting arena definitely induces the feel good hormones in you to brighten up not only your life but also the lives of people around you.



## BANKING ODYSSEY QUIZ



- 1) In which year was our founder, Sri Ammembal Subba Rao Pai born?
- 2) Who was our founder's father?
- 3) Which language, other than Konkani and Kannada, did our founder learn to speak fluently like his native?
- 4) What subjects did our founder study at Presidency College?
- 5) When did the first class of Canara High School start?
- 6) Who laid the foundation stone for Krishna Mandhir (the school temple) on 24.02.1934, which housed some classes of Canara High School?
- 7) When did Canara Hindu permanent Fund Ltd officially register (month & year)?
- 8) What was the paid up capital of the Canara Hindu Permanent Fund in 1906?
- 9) How many employees were there when Canara Hindu Permanent Fund started in 1906?
- 10) When did our founder Sri. Ammembal Subba Rao Pai pass away?

Answers on Page No. 50



# अ → अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै क → केनरा + ब → बैंक = केनरा बैंक



षोजो लोबो

प्रबंधक (राजभाषा)

क्षे.का. 1, एरणाकुलम

## आमुख:

जनता, जनता से परिवार और परिवार से समाज की प्रगति और उत्थान के लिए “अंधविश्वास और अज्ञानता को दूर करना” अत्यंत आवश्यक है और यह केवल “शिक्षा” से ही संभव है। इसके साथ ही अनुशासित जनता, समाज की प्रगति की नींव होती है और जनता को पूर्ण रूप से अनुशासित तब कह सकते हैं जब वे आर्थिक रूप से भी अनुशासित हों। मितव्ययिता एवं बचत की आदत विकसित करने से एक अनुशासित समाज का विकास संभव है। हमें जनता और समाज के प्रति समर्पित रहना चाहिए और हमेशा “जरूरतमंदों की सहायता करना” हमारा लक्ष्य होना चाहिए। “सेवा और समर्पण की भावना के साथ काम करने” से हम दूसरों का दिल जीत सकते हैं। “आसपास के मनुष्यों के प्रति सहानुभूति विकसित करना और कठिनाईयों तथा कष्टों को दूर करने या उनमें सकारात्मक परिवर्तन लाने के नज़रिये से परिवेश के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना” भी हमारा दायित्व है। कहीं पर भी यदि इन सिद्धांतों का संगम है, तो सफलता निश्चित है।

## श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै:

19 नवंबर 1852 में मंगलूरु के निकट मुल्की में श्री उपेंद्र पै के चौथे बेटे के रूप में श्री अम्मेम्बाल सुबा राव पै का जन्म हुआ। अपनी माँ के असामयिक निधन का उन पर इतना अधिक असर पड़ा कि वे अपनी पढ़ाई को गंभीरतापूर्वक लेने लगे। एक प्रतिष्ठित वकील, शिक्षाविद, समाज सुधारक एवं अतुल्य दूरदृष्टा के रूप में उभरने में उनके माता-पिता ही उनका मार्ग प्रशस्त किए थे।

उनका विश्वास था कि शिक्षा केवल पुरुषों तक ही सीमित नहीं है और वर्ष 1894 में, महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने केनरा गर्ल्स हाई स्कूल की शुरुआत की। उस जमाने में महिलाओं की शिक्षा के प्रति लोगों की मनोवृत्ति और

प्रचलित सामाजिक मूल्यों को देखते हुए यह निश्चित ही एक प्रगतिशील कदम था।

## केनरा बैंक की स्थापना:

श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै ने कहा था “एक अच्छा बैंक न केवल समाज का वित्तीय हृदय होता है, बल्कि आम जनता की आर्थिक हालत में सुधार लाने के लिए हर तरीके से मदद करने का दायित्व भी उसका है।”

इसी को ध्यान में रखते हुए श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै ने वर्ष 1906 में दक्षिण भारत के एक छोटे बंदरगाह शहर मंगलूरु में #75 ए, डोंगेरकेरी स्ट्रीट में “द केनरा हिन्दू पर्मानेंट फंड लि.” नाम से बैंक की स्थापना की। वर्ष 1910 में “केनरा बैंक लि.” के रूप में एक लिमिटेड कंपनी बन गया और वर्ष 1969 में राष्ट्रीयकरण के बाद केनरा बैंक।

श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै ने बैल गाड़ी पर गाँव – गाँव जाकर 50 रु. के 2000 शेयर के रूप में आरंभिक पूँजी





एकत्रित की। दिनांक 01 जुलाई 1906 को 4 कर्मचारियों के साथ “केनरा बैंक” का श्रीगणेश हुआ।

### केनरा बैंक का विस्तार :

“The first year it sleeps, the second year it creeps, the third year it leaps.” अंग्रेज़ी के उक्त कथन को सार्थक सिद्ध करते हुए दिनांक 1 अप्रैल 1926 को कारकला में प्रथम शाखा का उद्घाटन किया गया। अर्थात्, अपनी बुनियाद को ठोस बनाने के पश्चात्, शुरुआत से लगभग 20 वर्षों के बाद प्रथम शाखा का उद्घाटन किया गया।

### केनरा बैंक में अन्य बैंकों का विलय :

केनरा बैंक की विकास यात्रा के दौरान कई बैंक इसके हिस्से बने। वर्ष 1961 में चार बैंकों अर्थात् तिरुवनंतपुरम स्थित बैंक ऑफ़ केरल लिमिटेड, आलप्पुज़ा स्थित सिसिया मिडलैंड



बैंक, हैदराबाद स्थित जी रघुनाथमल बैंक लिमिटेड और तिरुवनंतपुरम स्थित त्रिवेंद्रम पर्मानेंट बैंक लिमिटेड का केनरा बैंक में विलय हो गया। स्थापना के 55 वर्ष के बाद वर्ष 1961 में केनरा बैंक के शाखाओं की कुल संख्या 100 हुई।

वर्ष 1963 में तृप्पूणितुरा स्थित श्री पूर्णत्रयीशा विलासम बैंक, तिरुच्चिरापल्ली स्थित अर्नाड बैंक, कोच्चिन स्थित कोच्चिन कमर्शियल बैंक, तिरुमंगलम (मदुरै) स्थित पांड्यान बैंक

लिमिटेड और वर्ष 1964 में पोल्लाची स्थित पोल्लाची यूनियन बैंक एवं वर्ष 1968 में उडुपि स्थित पंगल नायक बैंक लिमिटेड, उडुपि भी इसका हिस्सा बना।

वर्ष 1985 में भारतीय बैंकिंग इतिहास में तब तक का सबसे बड़ा विलय हुआ जिसमें 230 शाखाओं और 3500 कर्मचारियों वाला ‘द लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लिमिटेड’ का केनरा बैंक में विलय हुआ।

वर्ष 2020 में पहली बार एक राष्ट्रीयकृत बैंक, सिंडिकेट बैंक, केनरा बैंक के साथ समामेलित हुआ। समामेलन के पश्चात् भी बैंक का नाम “केनरा बैंक” रहा। भारत सरकार ने केनरा बैंक को वैश्विक स्तर पर एक प्रतिस्पर्धी ऋणदाता बनाने के उद्देश्य से केनरा बैंक में सिंडिकेट बैंक के समामेलन हेतु मंजूरी दे दी। समामेलन के पश्चात् केनरा बैंक भारत के चौथा सबसे बड़ा बैंक बन गया।

### केनरा बैंक – कुछ अन्य पहलू :

वर्ष 1966 में हीरक जयंती उद्घाटन समारोह के अवसर पर बैंक के नए प्रतीक और स्लोगन “विकास के लिए सेवारत-सेवा के लिए विकासरत” की शुरुआत की गई। 40 वर्षों के बाद 2006 में नए प्रतीक चिह्न और स्लोगन “रहे संग, बढ़े संग” की शुरुआत की गई।

बैंक अपनी विदेशी शाखाओं, शारजाह, संयुक्त अरब अमीरात स्थित प्रतिनिधि कार्यालय, भारतीय स्टेट बैंक के साथ मिलकर मॉस्को स्थित संयुक्त उद्यम बैंक, यथा कॉमर्शियल बैंक ऑफ़ इंडिया एलएलसी एवं तंजानिया में पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी, केनरा बैंक (तंजानिया) लिमिटेड के साथ विदेशों में भी बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करा रहा है।

बैंक की घरेलू अनुषंगियों में केनरा रोबेको आस्ति प्रबन्धन कंपनी लिमिटेड, केनरा फाइनेंशियल सर्विसेस लिमिटेड, केनरा बैंक सेक्यूरिटीज लिमिटेड, केनरा बैंक कंप्यूटर सर्विसेस लिमिटेड, केन फिन होम्स लिमिटेड, केन बैंक फ़ैक्टर्स लिमिटेड, केन बैंक वेंचर कैपिटल फंड लिमिटेड एवं केनरा एचएसबीसी ओबीसी लाइफ़ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड आदि शामिल हैं।



### केरल में केनरा बैंक :

भारत की दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर अरब सागर और सह्याद्रि पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित प्रान्त है केरल। केरल में बोली जानेवाली मुख्य भाषा मलयालम में इसे 'केरलम्' कहा जाता है। केरल, अपनी संस्कृति और भाषा-वैशिष्ट्य के कारण भारत में प्रमुख स्थान रखता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व केरल में राजाओं की रियासतें थीं। जुलाई 1949 में तिरुवितांकूर और कोच्चिन रियासतों को जोड़कर 'तिरुकोच्चि' राज्य का गठन किया गया। उस समय मलबार प्रदेश मद्रास राज्य (वर्तमान तमिलनाडु) का एक जिला मात्र था। 01 नवंबर 1956 में तिरुकोच्चि के साथ मलबार को भी जोड़ा गया और वर्तमान केरल की स्थापना हुई।



दिनांक 16 अक्टूबर 1926 को कासरगोड में खोली गई प्रथम शाखा के साथ केनरा बैंक ने केरल में पदार्पण किया। दिनांक 12 नवंबर 1926 को मान्चेरी, कोच्चिन में एक और शाखा का भी उद्घाटन किया गया।

यथा तारीख को केरल में बैंक की 733 शाखाएं और 895 एटीएम हैं। वर्तमान में विभिन्न श्रेणियों में पदस्थ 6275 प्रतिबद्ध कर्मचारीगण इन शाखाओं और अन्य इकाइयों के माध्यम से 90 लाख से अधिक ग्राहकों को बैंकिंग सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। इन शाखाओं, इकाइयों और एटीएम के नियंत्रण के लिए राज्य के विभिन्न जिलों में 14 क्षेत्रीय कार्यालय स्थित हैं और सभी कार्यालयों के समग्र नियंत्रण के लिए तिरुवनंतपुरम में अंचल कार्यालय स्थित है।

केरल राज्य के अलावे लक्षद्वीप एवं माही (पुदुच्चेरी) स्थित शाखाओं का भी नियंत्रण कार्य तिरुवनंतपुरम अंचल के

अधीन है। लक्षद्वीप में बैंक की 9 शाखाएं एवं माही में 1 शाखा कार्यरत है। यथा सितंबर 2020 को केरल में केनरा बैंक की 733 शाखाओं के साथ शाखा नेटवर्क में दूसरा स्थान और बाजार हिस्सेदारी 11% है। केरल में केनरा बैंक द्वारा प्रायोजित 'केरल ग्रामीण बैंक' की 634 शाखाएं भी कार्यरत हैं। केरल में बैंक का कुल कारोबार ₹1 लाख करोड़ को पार किया है।

केनरा बैंक, केरल में राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति का एवं लक्षद्वीप में संघ शासित क्षेत्र स्तरीय बैंकर्स समिति का संयोजक है। इसके अलावा केनरा बैंक केरल के 7 जिलों में अग्रणी बैंक की जिम्मेदारी भी निभा रहा है।

तिरुवनंतपुरम और आलप्पुष्पा में बैंक द्वारा प्रायोजित केनरा बैंक इंस्टिट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नॉलोजी (सीबीआईआईटी) कार्यरत है जहाँ युवाओं को कंप्यूटर में निःशुल्क प्रशिक्षण दी जाती है। इससे कंप्यूटर आधारित नौकरी पाने में युवाओं को मदद मिल रही है। इसके अलावा कोषिकोड, वंडूर, पालक्काड और तृशूर स्थित आरसेटी (ग्रामीण स्व रोजगार प्रशिक्षण संस्थान) में युवाओं को निःशुल्क आवासीय प्रशिक्षण दिला रहे हैं। कण्णपुरम में भी एक रुडसेटी (ग्रामीण विकास स्व रोजगार प्रशिक्षण संस्थान) स्थित है जहाँ युवाओं को स्व रोजगार कौशल प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। बैंक इस प्रकार अपनी बुनियादी सिद्धांतों के अनुरूप जरूरतमंदों को आवश्यक सहायता प्रदान करके समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाता है।

### उपसंहार :

बैंक के महान संस्थापक श्री अम्मैम्बाल सुब्बा राव पै के ठोस बुनियादी सिद्धांत, प्रबुद्ध नेतृत्व, अद्वितीय कार्य संस्कृति और बदलते बैंकिंग माहौल के लिए उल्लेखनीय अनुकूलनशीलता ने केनरा बैंक को वैश्विक मानक पर एक अग्रणी बैंकिंग संस्था बनने में सक्षम बनाया। हम केरल में सबसे पसंदीदा बैंक के रूप में उभरने की दिशा में अग्रसर है। आनेवाले दिनों में, प्रतिबद्ध और कर्मठ केनराइट्स के समर्पित प्रयास से बैंकिंग के हर पहलुओं में केनरा बैंक अव्वल स्थान हासिल करेगा, इसमें दो मत नहीं है।

## Insolvency & Bankruptcy Code, 2016 and Limitation Act, 1963-Applicability and other issues

**K V C Janaki Rama Rao**  
Deputy General Manager  
RL&FP Wing, Head Office



The Central Government introduced Insolvency & Bankruptcy Code, 2016 to have an effective and adequate framework for insolvency and bankruptcy of Corporate Persons, Individuals and Partnership Firms. The provisions relating to individual and partnership firms are yet to be notified. Initially there was confusion regarding the applicability of the provision of Limitation Act on proceedings under IBC, 2016. In 2017, this issue was further complicated when the NCLAT in the matters of *Speculum Plast Private Limited v. PTC Techno Private Limited and Neelkanth Township and Construction Pvt. Ltd. V. Urban Infrastructure Trustees Ltd* held that the Limitation Act will not be applicable to proceedings under the IBC. This led to huge unrest among the Creditors.

To settle this issue the Central Government inserted Section 238A by enacting the Insolvency and Bankruptcy Code (Second Amendment) Act, 2018, (w.e.f. 06.06.2018) which stipulated that the provisions of the Limitation Act, 1963 shall, as far as may be, apply to the proceedings under IBC. Hon'ble Supreme Court in the matter of *B.K. Educational Services (P) Ltd. Vs. Parag Gupta & Associates* further clarified that the Limitation Act is applicable to applications filed under Sections 7 and 9 of the Code from the inception of the Code which means that the Section 238A is applicable retrospectively. Further, it was held by the Apex Court that Article 137 of the Limitation Act would apply to the applications filed under IBC, which prescribes the period of limitation to be 3 years. It was also observed by the Court that where the default has occurred over three years prior to the date of filing of the application, the application would be barred under Article 137 of the Limitation Act.

In the matter of *Ashish Kumar V. Vinod Kumar Pukhraj Ambavat*, the NCLAT held that One Time Settlement proposal or letters for settlement from Corporate Borrower could be considered as Acknowledgement of Debt for the purpose of computing fresh period of limitation under Limitation Act, 1963. In another matter of *V. Padmakumar Stressed Assets Stabilisation Fund (SASF)*, the NCLAT held

that entry in balance sheet / annual return, which is required to be prepared to comply with statutory requirements, cannot be treated to be an acknowledgement under Section 18 of the Limitation Act.

Recently in the matter of *Babulal Vardharji Gurjar V. Veer Gurjar Aluminium Industries Pvt. Ltd. & Anr.*, the Hon'ble Supreme Court reiterated that if default had occurred over three years prior to the date of filing of the application, the application would be time-barred.

Further, in the matter of *Gaurav Hargovindbhai Dave V. ARCIL & ANR.*, the Apex Court observed that the intent of the code could not have been to give a new lease of life to debts, which are already time-barred. The Supreme Court also held that it is not for the court to interpret, commercially or otherwise, the articles of the Limitation Act when it is clear that a particular article gets attracted. Therefore, it may be said that the approach of the Courts particularly with respect to extension of limitation period is not clear as of now, thus it is advisable that the applications under IBC are filed within limitation i.e. within 3 years from the date of default in order to avoid any disputes relating to admissibility of the applications.





## What change of leadership in US means for the Indian economy?



**Rupali Sarkar**

Divisional Manager  
Economist, SP & D Wing  
H O, Bengaluru

The US concluded its 59th Presidential election on 3rd Nov'20, resulting in a change in its leadership. The Democratic party member and former vice president Mr. Joe Biden and US senator Ms. Kamala Harris defeated the incumbent president Mr. Donald Trump and vice president Mr. Mike Pence of the Republic party.

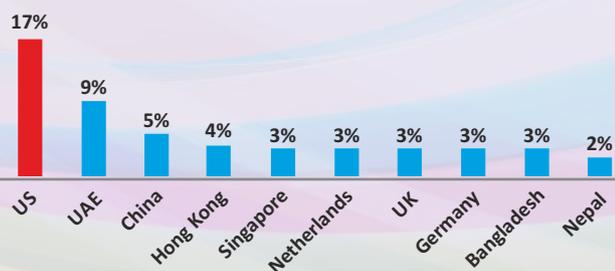
The US election is one of the most watched and closely tracked elections in the World due to the significant implications the US leadership has for the world economy through the close linkages in a globalized world and the spillover effects. A leadership change in US has significant implications for India as well directly through channels like trade, capital flows and emigration as well as indirectly through impact on global economy and financial markets. Let's look at each of these channels and the possible impact the leadership change can have on the domestic economy.

### The Trade Channel

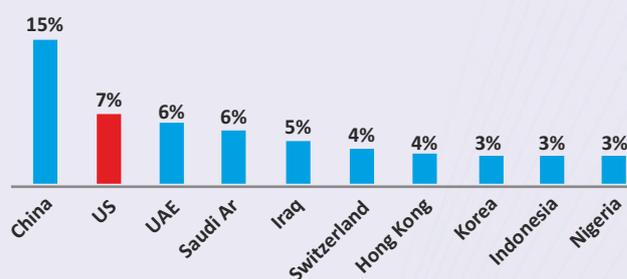
US diplomatic and economic policies have far reaching implications for India US trade ties. For example, in 2019, US President Donald Trump had officially revoked India's Generalized System of Preferences status (GSP), a 45-year old preferential trade program, thus curbing all tariff benefits given to Indian exports to US. However, with a change in leadership now, things look brighter as Joe Biden is perceived as more pro trade than his predecessor Donald Trump.

This channel is particularly important for India as US has been one of India's top trading partners- largest export

### Export to Top countries (% of Total)



### Import from Top countries (% of Total)



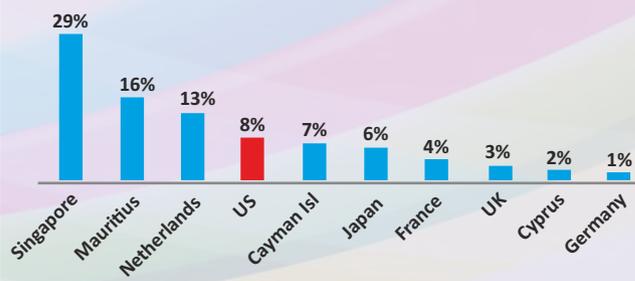
destination and second largest import source. US accounts for around 17% of India's total exports and 7% of its total imports. India runs a trade surplus of around \$ 18 billion with the US.

### The Capital Flows Channel

Another channel through which change in US leadership and the consequent policies may impact the Indian economy is capital flows, particularly Foreign Direct Investment (FDI). US is the 4th largest source FDI country for India, accounting for around 8% of the country's total inflows.

Here too, a change in US leadership could turn out to be a boon for India as Donald Trump's "America First" campaign and other policies like cut in corporate tax rate from 35% to 21% were aimed at reshoring (moving back) of businesses to US. This was broadly negative for FDI inflows into India from US based companies. However, Joe Biden, in his presidential campaign has been vocal about reversing

### FDI from Top countries (% of total)





much of the tax changes brought about by the Trump administration. This prima facie is positive for long-term FDI in flows into India.

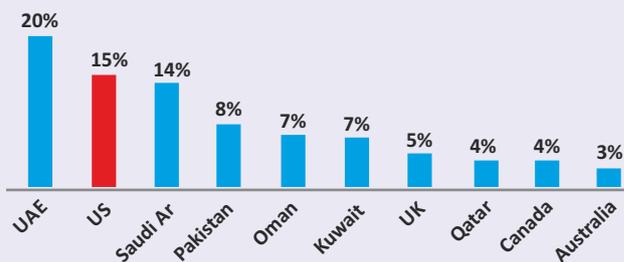
### The Migration and Remittances Channel

The third and a key impact channel is that of emigration. From India's standpoint, US is the second largest migrant destination, accounting for about 15% of India's total migrant population. This has also made US the 2nd largest source of remittances for India, accounting for 17% of the total remittances received. Further, Indian citizens are the top recipients of the US H-1B visas. Hence, US diplomatic policies in this direction are crucial.

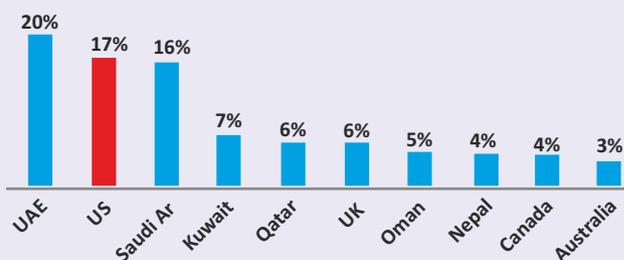
While Donald Trump has been vocal about his anti-immigrant stand and policies like “Buy American, Hire American” Executive Order and changes in the H-1B program have led to an increase in visa denial and made emigration norms more stringent, Joe Biden supports immigration reforms. He has opined in the past that such reforms are essential to attract and retain highly skilled workers and is also in favor of introducing changes to eliminate limits on employment-based green cards.

Thus the leadership change in US appears positive for the Indian economy at the margin though much will depend on the actual execution as well as the diplomatic ties in the coming years.

### Outward migration from India to top countries (% of Total)



### Remittances from Top countries (% of Total)



**“The ultimate resource in economic development is people. It is people, not capital or raw materials that develop an economy.”**

**- Peter Drucker**



### Accumulated loss of 17 RRBs rises to ₹6,467 crore in FY20:

The three major stakeholders of Regional Rural Banks (RRBs) – Central government, sponsor Public Sector Banks (PSBs) and the government of the State in which they operate – may have to worry about the future of 17 RRBs whose collective accumulated loss soared to ₹6,467 crore as of March-end 2020. As of March-end 2019, 11 RRBs had a collective accumulated loss of ₹2,887 crore. The RRBs with huge accumulated losses as of March-end 2020 include Bangiya GVB (₹1,048 crore), Odisha GB (₹1,026 crore), Utkal GB (₹963 crore), Madhya Pradesh GB (₹656 crore), Madhyanchal GB (₹548 crore), Uttar Bihar GB (₹377 crore) and Assam GVB (₹372 crore), according to data compiled by the National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD).

### NPCI working on AI based fraud detection model:

The National Payments Corporation of India (NPCI) is working on some artificial intelligence-based fraud detection models as banks and financial systems are now increasingly using the technology to further their business, its Managing Director and CEO Mr Dilip Asbe said, many banks have launched chatbots, many have launched the fraud detection Robo advisory services, while high frequency trading has been fairly known as to be using AI and video KYC is another area where AI is being used, Mr Asbe said.

### At 41 million real-time transactions a day, India leads the world: Report

The country has become the global leader in real-time financial transactions with 41 million transactions per day, which is more than double that of the last year, says an international report. The Covid-19 pandemic has seen India doubling its every day real-time transactions at 41 million, says the latest report from FIS, which is a leading provider of technology solutions for merchants, banks and capital markets firms globally.

### Small banks must have an ED in addition to MD and CEO:

The RBI must ensure that even small- to mid-sized private sector banks have an Executive Director in addition to the Managing Director and Chief Executive Officer so that in case the latter retires or is ousted, the day to-day affairs of the bank can be conducted without a hitch, say banking experts. Recent developments at Lakshmi Vilas Bank (LVB) and Dhanlaxmi Bank (DLB)

underscore the importance of having one more Executive Director on the board who can handle the functions of the MD and CEO.

### ODI plans to face stricter security

The Overseas Direct Investment (ODI) applications on Indian entities could be subject to enhanced scrutiny as the RBI is planning to set up a special committee to review them, said two people with knowledge of the development. This is part of the ongoing crackdown against round-tripping of money by Indian entities through the avenue. As ODI application can currently be approved or rejected by a Chief General Manager (CGM) of the RBI. The Committee that is being planned will consist of RBI and Finance Ministry officials along with representatives of other regulatory agencies. Indian entities and individuals can use the ODI route to make overseas investments—in companies, joint ventures etc.

### Reserve Bank bars Payment System Operators from launching new QR codes

The Reserve Bank barred Payment System Operators (PSOs) from launching any new proprietary QR code for payment transactions. Currently, there are two interoperable QR codes — UPI QR and Bharat QR. QR codes are two-dimensional machine-readable barcodes, which are increasingly used to facilitate mobile payments at the point-of-sale. QR codes can store a large amount of information. The decision to continue with the two existing Quick Response (QR) codes was based on the recommendations of the Committee, which was set up by the Reserve Bank under the Chairmanship of Mr Deepak Phatak to review the current system of such codes in India and suggest measures for moving towards interoperable QR codes. UPI QR and Bharat QR shall continue as at present, the central bank said in a notification.

### Union Bank of India MD&CEO elected as new IBA Chairman

Indian Banks' Association (IBA) said Union Bank of India's MD and CEO Mr Rajkiran Rai G has been elected as the association's Chairman for the term 2020-21. "The Managing Committee of IBA at its meeting held on October 16, 2020 elected Mr Rajkiran Rai G, Managing Director and CEO, Union Bank of India as the Chairman, IBA for the term 2020-21," a release said.



### Banks free to pick their Cos for digital documentation

Banks can choose their own technology services providers for digital documentation services, the government has said, amid a growing push for paperless loan applications during the Covid-19 pandemic. Integration with National e-Governance Services (NeSL), a government entity that stores information related to financial contracts in electronic format, is not compulsory, it clarified in response to a petition in the Delhi High Court. It is not mandatory for banks to sign up with NeSL alone, Central Government's Standing Counsel, Mr Kirtiman Singh, said.

### FM to Banks: Link all A/Cs with Aadhaar by March 2021

Finance minister Ms Nirmala Sitharaman directed banks to link all accounts with Aadhaar numbers of respective customers latest by March 31, 2021. Addressing the 73rd annual general meeting of the Indian Banks' Association, the Minister impressed on banks to focus on digital transactions and asked them to promote RuPay cards over others now that the card network has become global. "UPI should be a common parlance word in all our banks," she said. "Whoever needs a card, RuPay will be the only card you would promote and I would not think it is necessary today in India when RuPay is becoming global, for Indians to be given any other card first than RuPay itself," she added. There were more than 600 million RuPay cards as of January. As for the Aadhaar-seeding of bank accounts, the minister said this should be done ideally by December and "if not then, then by March 31, 2021".

### Business enterprises to get support through EPFO contribution for job creation

Over 99 per cent of business establishments will get indirect wage support through EPFO contribution of 24 per cent for two years under Atmanirbhar Bharat Rozgar Yojana. It will come into effect from 1st October, Employees enrolled till June 30 will get the benefit. The scheme will cost ₹6,000 crore. Finance Minister Ms Nirmala Sitharaman said that this scheme will not just encourage formal sector but also prompt informal sector to get registered under EPFO for the benefit. The new scheme will cover any employee joining employment in EPFO registered establishments on monthly wages less than ₹15,000. Also EPF members drawing monthly wages of less than ₹15,000, who lost

jobs during March- September but re-employed on or after October 1, will be covered.

### Industry share in GDP hit 20-year low in 2019:

Manufacturing made up 27.5 per cent of India's Gross Domestic Product (GDP) in 2019, lowest in two decades, showing the share of the sector continues to shrink in the economy despite the government's Make-in-India push. This makes India one of the least industrialised countries in Asia with the exception of Pakistan, Nepal and Myanmar. The industrial and manufacturing sector's share is down 250 basis points (bps) over the past five years. It accounted for 29.3 per cent of the country's GDP three years ago and 30 per cent in 2014. One basis point is one-hundredth of a percent.

### Stressed debt across sectors falls 37% in Q2 to ₹15 trn: Credit Suisse

The gradual opening of the economy after a stringent lockdown imposed by the rampant spread of Covid-19 has proved to be a boon for companies, especially the ones saddled with debt. A November 19 report by Credit Suisse's Mr Ashish Gupta, their Managing Director and head of equity research for India, along with Mr Kush Shah and Mr Jayant Kharote says the stressed debt across sectors dropped 37 per cent to ₹15 trillion in the second quarter of the current fiscal (Q2FY21) from ₹23.8 trillion in Q1FY21. The share of debt with loss-making companies was also down to 23 per cent as compared to 28-30 per cent pre-Covid-19.

### RBI asks banks not to approve proposals of foreign law firms to open branch office in India:

The RBI on Monday asked banks not to approve any proposal of foreign law firms to open a branch office, project office or liaison office in the country under FEMA for the purpose of practicing legal profession. The RBI has issued a circular in this regard in view of a Supreme Court order wherein the apex court held that advocates enrolled under the Advocates Act, 1961 alone are entitled to practice law in India and foreign law firms or foreign lawyers cannot practice the profession of law. "Banks are directed not to grant any approval to any branch office, project office, liaison office or other place of business in India under FEMA for the purpose of practicing legal profession in India," the RBI said.

## BANKING NEWS

## Ms Shantha Rangaswamy, an indomitable person and Spirit

Ms Shantha Rangaswamy is a retired General Manager of our Bank and a legendary Indian Sports person. She is undoubtedly the pioneer of Women's Cricket in India who holds the records of many first to her name, namely:

- First Captain of Indian Women's Cricket Team
- First Women to Score a Century in Test Cricket
- First Women to Score a Six in Test Cricket
- First Captain to Win a Test match
- First Women to receive the prestigious Arjuna Award from the Govt. of India
- First Women to receive the BCCI Lifetime Achievement Award
- First Women in the Board of Control for Cricket in India (BCCI) Apex Council
- First & the only Sports person in Canara Bank to reach the level of a General Manager

Ms Shantha Rangaswamy fought against all odds in a patriarchal society to excel in the sport and lay foundation for the youth to follow. She found passion in a male dominated sport – Cricket and she stuck with it, even when there were no Women's Team or matches. If Women's Cricket is making a mark today in India, it is mainly because of the sustained and selfless efforts of Ms Shantha Rangaswamy.



She played 16 test matches between 1976 and 1991 and 19 ODIs between 1981 and 1986. The numbers may not look big, but if you see that 16 tests were played in a span of 15 years clearly shows how far and few Women test matches were held during that period. Women's Cricket never had much financial backing and despite this, Shantha Rangaswamy toiled hard to keep Women's Cricket flag flying till it was taken over by the BCCI. Her efforts are a folklore in Women's Cricket, in fact in 1988, when the Indian Government denied permission to Women Team to participate in the World Cup at Australia, she reached out to the then Prime Minister Mr Rajiv Gandhi for the clearance. She is instrumental in getting BCCI Central Contract and Pension to Women Cricketers.



She has also served Indian Cricket as a Coach, Chairperson of the Indian Women Senior Selection Committee and presently, serving as a member of the BCCI Apex Council.

With an objective to have a deeper insights into her life and inspire our readers, the Sports Cell Manager had a chat with her and the excerpts are as under:

### On how her Cricket career started:

She started playing Cricket in her courtyard at her ancestral home in Basavanagudi, Bengaluru. They were a joint family and she, her sisters, cousins and friends used to play tennis ball Cricket in the courtyard. Since there was no Women's Cricket, she represented the State in National Ball Badminton and Captained the State team in the Soft Ball Championships. Since soft ball and Cricket sport were of same nature, the soft ball team started practicing Cricket also. In April 1973, the first ever Women Cricket tournament was held and only Maharashtra, Mumbai and UP (half team due to want of players) had participated in an Inter State Competition. Hearing about this, Ms. Shantha Rangswamy started building a team and the next full-fledged Women Inter State Cricket Tournament with 16 teams was held in Nov 1973 and she captained the Karnataka State team.



### Her early International days:

Ms. Shantha first made her mark at the International stage when Australia U-25 side toured India in Feb 1975. She scored 91 runs in the second match and when Australia needed 5 runs in the final over with 4 wickets in hand, she took 3 wickets in 6 balls to draw the game for India.

### When and how she joined the Bank:

In early 1975 she had applied for a job in the Bank and was asked to write a written test. As she had not heard from the Bank till Jan 1976, through her contacts she ensured that the message reached the General Manager of the Bank. She was called for an interview on 8th Jan and the same evening was handed over an appointment order and she joined the Bank on 9th Jan 1976 as Clerk (salary around Rs. 400/-). This is the first time she met her Bank mentor Mr Jayavant Rao, who retired from the services of the Bank as a General Manager.

### Support from the Bank in her early days & International achievements after joining the Bank:

Ms. Shantha Rangaswamy became Captain of Indian Women Cricket Team after joining the Bank. In 1976, Bank was sanctioning only 30 days of Special leave in a calendar year, however considering the achievements of Ms. Shantha Rangaswamy, Special leave was sanctioned to her for attending camps and matches beyond 30 days also. She made her International Test debut against West Indies in Bangalore in 1976 and scored 74 runs. This innings was witnessed by top executives of the Bank. She also led India team to its first test win in the Test match at Patna during the same series. She had scored 4 half-centuries and averaged 42.33 in that 6 test match series. In early 1977, against New Zealand at New Zealand, she scored the first ever century in Women's Test history. She scored a century in Indian team's total of 177 runs, shows the kind of impact she had in the team.

Ms. Shantha Rangaswamy actually scored her first century against New Zealand when they had toured India in 1976. That has not been accounted in her career achievements as it did not get the official test status from the then apex body International Women Cricket Council (IWCC).

Considering her extra-ordinary achievements, Bank gave her an out of turn promotion as Scale I Officer. In the interview, the interviewing executive had told **"You led on the field, now take a lead in the Bank"**.

### Banking Career: And how well she led till she retired from the services of the Bank!

After her active playing days, she took up full time banking and worked at Lucknow Circle, headed Chamarajpet Branch & Sheshadripuram Branch, Bengaluru. She served at Mysore, Mumbai & headed Nagpur Circle as Deputy General Manager. She returned to Bangalore as DGM of Retail Asset & subsidiaries Wing. She retired as General Manager of Recovery Wing. She is very proud of Canara Bank and continues to stay connected with most of her Bank colleagues even today.

Even during her banking days, she continued to be associated with Karnataka and Indian Women's Cricket as Coach, Administrator and Selector.

### Post retirement:

She was bestowed with the "Life Time Achievement" award by the Board of Control for Cricket in India in 2017 for her immense contributions to Indian Cricket. She was also honoured with the Hon. Life Time membership by Marylebone Cricket Club (MCC). Ms. Shantha Rangaswamy was the Chairman of Indian Women Senior Selection Committee for 3 years. She was the head of Women's Cricket at Karnataka State Cricket Association also. She was presented the "Life Time Achievement" award by the Govt. of Karnataka, in Nov 2020. She is now member of the BCCI Apex Council. Apex Council is like the Board of Directors of any Company or Bank and she is the Women representative in the Council led by Shri Sourav Ganguly, former Indian Captain & the President of BCCI.

Ms Shantha Rangaswamy has been an inspiration, a trailblazer and an embodiment of hard work and tenacity. Canara Bank is proud that she is part of Canarites family. She has inspired a generation of Women Sportspersons in our country through her achievements and contributions. She is the doyen of Indian Women's Cricket. With her great sense of service and dedication, both as a banker and as a sportsperson, she truly was instrumental in transforming the lives of many men and women by helping them tide over the hurdles and obstacles in life, helping them to embrace failure and working towards their goals and aspirations with renewed zest and vigour. Something in perfect congruence with the tenets laid down by our beloved founder, Sri. Amembal Subba Rao Pai.

*We wish her good health, happiness and many more achievements.*



अंचल कार्यालयों में संस्थापक दिवस समारोह  
Founder's day Celebration at Circle Offices



AGRA



AHMEDABAD



BENGALURU



BHOPAL



BHUBANESWAR



CHANDIGARH



CHENNAI



DELHI



GUWAHATI



HYDERABAD



HUBBALLI



JAIPUR

अंचल कार्यालयों में संस्थापक दिवस समारोह  
Founder's day Celebration at Circle Offices



KARNAL



KOLKATA



LUCKNOW



MADURAI



MANGALURU



MANIPAL



MUMBAI



PATNA



PUNE



RANCHI



THIRUVANANTHAPURAM

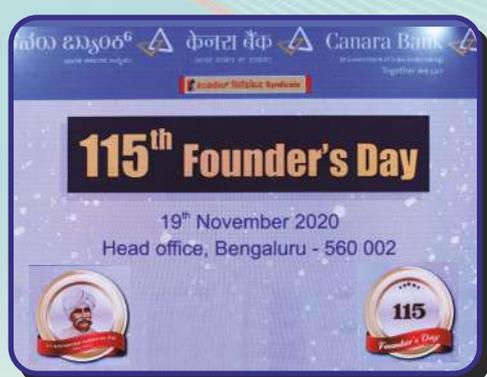


VIJAYAWADA

# प्रधान कार्यालय में संस Founder's Day Celebr



# स्थापक दिवस समारोह Celebration at Head Office



## Head Office

On 14.10.2020 Ms. A Manimekhalai, ED handed over a DD of ₹25,97,500/- to Sri Jayadeva Institute of Cardiovascular Science & Research (SJICR), Bengaluru for treatment of 250 Heart Patients belonging to the poorest of the poor and 5 Wheel Chairs under CSR initiatives. Sri V M Giridhar, CGM, Sri Rakesh Kashyap, Sri S Venkataramana & Smt. R Anuradha, GMs, and other Hospital authorities were present during the function.



## Learning and Development Vertical

Ms. A Manimekhalai, ED visited Canara Institute Of Bank Management (CIBM), Manipal on 12.11.2020. She also visited Canara Bank's museum along with Sri Rama Naik, GM and Smt Vimala Vijaya Bhaskar, DGM .



On 23.11.2020 Sri L V R Prasad, CGM, inaugurated the PAN India PO/AEO Induction Programme Conducted at



10 locations- Manipal, Gurugram, Chennai, Hyderabad, Kolkata, Pune, Thiruvananthapuram, Madurai, Ranchi and Mangaluru, virtually through Video Conferencing in the presence of Sri R Girees Kumar, GM, and Sri Shankar S, GM, HR Wing and other HR Wing Executives.

## Bengaluru

Jayanagar 4th T Block branch celebrated its Golden Jubilee on 14.09.2020. Smt P V Bharathi (Ex ED and Ex MD & CEO of Corporation bank), Sri Lakshmi Narayanan EX ED, Sri Giridhar V M, CGM, Sri Venkataraman S, GM, Sri R V Pratheep, DGM, other executives and staff were present on the occasion.



Bengaluru Circle organised a "Retail Expo" at CANDI Branch" on 13.11.2020. Reputed Builders, Dealers and Customers from RO Central, Bengaluru City participated in the event. Sri V MGiridhar, CGM, addressed the gathering along with Sri S Venkatramana GM & Smt. Anuradha, GM. Spot sanctions for Home & Vehicle Loans were handed over to the customers during the event.



## Bhubaneswar

Berhampur RO conducted a CSR activity on 22.10.2020. Sri B L Meena, GM, CO, Bhubaneswar handed over grocery items to the Director of Blind School and

distributed Masks and sanitizers to the blind children of the school. Sri M Murali Krishna, AGM, Sri Kumar Sanjeev, DM, Sri P K Hota, DM, Sri D K Padhy, SM and other School authorities were present during the event.



### Hubballi

CO Hubballi observed Vigilance Awareness Week from 27.10.2020 to 02.11.2020. An Essay Writing Competition was conducted by online mode at Circle level on the theme “Satark Bharat, Samridh Bharat” (Vigilant India, Prosperous India)”. Sri P Krishnakanth, IPS, Superintendent of Police- Dharwad was the Chief Guest for valedictory function conducted on 02.11.2020 at CO.



### Hyderabad



As part of observance of Vigilance Awareness Week - 2020 a Walkathon was organised by CO, Hyderabad on 28.10.2020 from Circle Office to Secunderabad East Metro Station. The motive of the event was to educate citizens to take active participation to eliminate corruption in public life.

### Madurai

The new building premises for RSETI Dindigul was inaugurated by Ms A.Manimekhalai, ED on 04.11.2020 along with Smt. Vijayalakshmi IAS, District Collector, Dindigul. Sri Rakesh Kashyap, GM, Sri T T Shivaguru, GM, and Sri D Surendran, GM attended the function.



The new premises of N Panjampatti branch was inaugurated on 28.10.2020 by Sri K Venkateswaralu, DGM. Sri Jose V Muttath, AGM, Sri Chandrasekaran B, Smt. Monomani S, DMs, Smt. Maya P T, Manager, N Panjampatti Branch, Executives and staff members from RO and nearby Branches also were also present during the event.



### Mangaluru

On 06.10.2020, SME Sulabh, and RO, Mangaluru organised an MSME camp in premises of Balmatta Road Branch, Mangaluru for cluster of branches. A good number of prospective customers attended the

Camp from cluster branches. The camp was headed by Sri Yogish B Acharya, GM, Sri Bal Mukund Sharma, DGM, Smt S Suchithra, DGM, Sri K S Dharmik, AGM, and Sri Gopala Naik, AGM. 6 MSME proposals amounting ₹98.00 Lakhs were Sanctioned and 18 leads amounting ₹262.50 Lakhs were generated during the camp.



On the occasion of 115th Founder's Day, Balmatta branch organised a coins distribution mela. Sri Yogish B Acharya, GM and Dr.Rajendra K V, DC, Mangaluru graced the occasion. Loan sanctions were handed over to the beneficiaries from various branches under PM Svanidhi street vendor's scheme, Fisheries loan scheme and Mudra scheme. Executives from CO and staff from various branches along with customers were present during the event.



### Manipal



Regional Office Udupi I & II conducted Canara Car Utsav 2020 on 21st & 22nd October 2020 at CO, Manipal as a part of Canara Retail Utsav. The event was inaugurated by Sri Rama Naik K, GM. Sri Pradeepa R Bhaktha, DGM Smt P Padmavathi, DGM, Smt Leena P Pinto, DGM, Sri K Kali AGM and other executives & staff of CO were present on the occasion. The branches of Udupi I & II ROs sanctioned 30 car Loans amounting to ₹277 lakh and 90 leads amounting to ₹6.30 Cr were generated.



A "Mega Retail Loan Mela" was conducted on 26.11.2020 at Mandipet Main Branch, Davangere involving all the branches of Davanagere. Sri K Rama Naik, GM inaugurated the programme. H Raghu Raja, AGM, Sri A Thippeswamy, DM and a good number of prospective customers participated in the Mela. Sanction letters amounting to ₹12.70 Crore were distributed by the GM. 72 leads amounting to ₹16.48 Cr were also generated during the camp.

### Thiruvananthapuram

Business Strategic Meet of all fourteen Regions under Thiruvananthapuram Circles Q2 FY'20-21 was held at CO on 19.10. 2020. Sri Nair Ajit Krishnan, GM, delivered the key note address and presented performance report of the Circle. Sri B C Rao, GM, Over Seeing Executive, Head Office addressed the meeting through VC. Best performing Regions in various parameters were felicitated during the function.



Retail Asset Hub, Ernakulam conducted Retail Cluster Camps from 03.11.2020 to 05.11.2020 at six different venues. Smt. Annamma Simon, DGM inaugurated the camp. All branches in the region attended the camp at various venues. Around 182 Housing Loan leads amounting to ₹38.09 crore were generated during the programme.



## Vijayawada

Review Meeting of Regional Offices of Vijayawada Circle was conducted on 22.10.2020 at CO, with the nomenclature “ROs Leadership Connect- Q2”. Sri I Shabbir Hussain, CGM, Sri Muralidhar Behera, DGM, Sri T G Boraiah, DGM, Executives from CO and all the 12 Regional Office In charges attended the meeting. Sri K Srinivasa Rao, CGM Reconciliation Wing, Head office addressed the RO heads through VC.



## Couple's Corner

To flash your marriage portrait under this column, please send the details referring to memo No. 84/2014 dated 13.10.2014



*Sri Thallam Praveen*  
Officer, Head office, Bengaluru  
Weds  
*Ms. Malavika Mitta*

# The Founding Principles that binds us....



**Abhijith N Rao,**  
Officer,  
PM Section, HR Wing,  
HO Bangalore

“Coffee is amazing Shiva, thank Harini for that and why are you sad?” asked Vineeth. They had met at Shiva's place as a part of their agreement to meet every Sunday as long as they are posted in the same town.

“Vini, ha ha these are unconnected statements. Anyway that's you. I am not sad man, I am just lost in search of an idea for the office article. I seem to have lost all the creativity and ability to think.”

“Come on man, you can't think eh? What is the article about?”

“About Founding Principles of our Bank and I have to submit it by this Saturday.”

Shiva's curious daughter made her way into the conversation as she overheard her pappa say the word principles. “Pappa even my principal has asked me to submit my project on Saturday. Are all these principals bad huh?”

“Sweetheart, come here. Now, we had one such principal who was so good that he gave us many principles to follow. Not all principals are bad, you know.” Said Vineeth with a hearty laugh. The little one got even more confused than she was before.

“Pappa I don't understand what uncle is talking.”

“Paapu (endearing word in Kannada for baby), the principal you are talking is a person and we were talking about principles spelt as p-r-i-n-c-i-p-l-e which means a set of moral rules to guide us in our life. And the principal who uncle is referring is the great founder of our Bank, Sri Ammembal Subba Rao Pai who gave us 7 such moral rules to follow. They are called Founding Principles of our Bank.”

Shiva's explanation made the little one more curious. “Pappa what are those founding principles?”

“Hmmm... Imagine paapu, if someone tells you that the Sun revolves around the Earth, will you believe in it? What does your Science text book say about that?”, asked Vineeth. “Nooooo uncle, the Earth revolves around the Sun and is a part of the Solar system. Vimala madam just taught this just last week. That is why we have eclipses, is what she says.”, the little one's face lit up as she showed off her new learning.

“You see sweetie pie, so now you don't believe in the superstition around eclipses and also are not ignorant. Our principal's first two principles are to remove Superstition and ignorance and spread education among all to help them remove superstition and ignorance. Do you now understand what your education has taught you, but there are still some people who believe in superstitions. So our founder asked us to help remove superstitions and spread education. In fact he also started a school for girls called Canara Girls School!”

“Wow, uncle. What's the next one, does it pertain to maths?” was the little one's next question.

“Ha ha, you are smart girl. Yes, our founder said that we should inculcate the habit of thrift and savings. To explain better, do you have a piggy bank with you?” The little one in affirmative with full joy, she was already in the groove.

“Hmmm, very good, then you already have the habit of thrift and savings. You should teach me someday how to save then sweetheart.” said Vineeth as he looked at Shiva and Shiva smiled back at both of them.

“Now, as the next principle concerns, it might seem a little complicated to you. Our founder meant our Bank to not only be a financial center but also help people by being the society's heart as well.” Vineeth was racking his brains for an example to explain to the little one. He wanted another round of coffee, but he let that thought rest.

The little one did not seem to understand, Shiva pitched in. "Paapu you remember we buy our vegetables from the old Ajji (Grandma in Kannada) always even though there are a lot of other shops around. Why do we do it?"

"Paapa, so that we get our veggies and Ajji can empty her basket. And Ajji always gives me a huge smile and extra carrot."

Shiva & Vineeth laughed at her answer, but they sure knew that the little one got some part of the message. "You can think of this principle as something similar to that. Our founder asked us not only to do just business with the society, but also be a part of it. Anyway you will understand that when you are a little older, Ok?"

"Ok Vini uncle, now tell me the other principles please."

"Alright munchkin, listen. You said just now that you buy your veggies from the old Ajji. You see that Ajji is a dedicated and sincere woman, she comes to the market with the same sincerity every day, correct? Also, when you buy veggies from her, you are not only assisting the old woman in emptying her basket and making good of her business, but you also assist her in fulfilling her needs. You show concern for your fellow human beings and you are being sensitive to your surroundings. By doing so you are making changes for good in someone's life and also helping them overcome their hardships and sufferings. These are the same things our founder told us as the last 4 principles. Do you understand?"

The little one was a proud woman now, you could see the pride in her face writ large. "Oh yes Vini uncle, these are very easy things to do. And mamma and me do it daily you know."

"Congratulations woman, you can join our Bank very soon as you already know our principles so well. When can we expect you my lady?" said Vineeth as he looked at Shiva with a sense of satisfaction.

The little one was hopping with excitement. She had a sense that she was being invited to an exclusive club and she couldn't hide her excitement. She looked at her papa and said, "I cannot now, but my summer holidays are coming soon and I shall join as soon as possible uncle." Shiva nodded in affirmation and the little one

jumped around the house claiming she would join the Bank very soon.

Harini walked out of the kitchen with another round of fresh coffee and the little one hugged her. She picked her up and gave her a kiss. She smiled at both Shiva and Vineeth. Vineeth was waiting for the coffee rather too badly. He had racked his brains to the maximum. "Shiva sometimes it is difficult to explain things to little kids. You have to un-complicate things to make them understand. I'll say again that the coffee is amazing."

Shiva did not respond for a moment. He was contemplating something very deeply.

"Vini, on the contrary if we recall the conversation, we had with the little one, sometimes it is really too easy to follow principles in our lives. The message our founder gave us is nothing but the way he led his life and expected all of us to lead too, so that we can make ourselves and our society a better place. In fact, the necessity of helping the needy is far greater in this growing unequal world and the need for being sensitive to our surroundings and concern towards our fellow beings is mandatory in a disconnected world. I think, these are Foundational principles instead of Founding principles, as they apply to humanity at large. Don't you think so?"

"Hmmm Shiva, coffee is supposed to cheer up your mood man. Ha ha, on a serious note you are so right. The little one made us realize what we have always had in front of us. It is not without such strong ethical and moral foundations that an organization found in 1906 in a small village is one of the largest Banks in the country. An organization is nothing but a sum total of its people right, so by implication we also possess these same principles. You wouldn't have bought vegetables from an old woman if you didn't have empathy Shiva. Anyway, I have an idea, why don't you write this conversation as an article. You just need to type that's all."

Shiva smiled at Vineeth and shouted, "Harini, two more cups of coffee, just for me, lots of writing, err typing to do. Vini has had enough for today."

Harini looked confused as both Shiva and Vini had a hearty laugh and Vini got up to give the little one a huge hug. It was a Sunday well spent.





# मानव-हितैषी श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै



बी के उप्रेती

भूतपूर्व वरिष्ठ प्रबंधक  
केनरा बैंक

हमारे बैंक के संस्थापक श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै गौड़ सारस्वत ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज 1380 ईस्वी में गोवा से दक्षिण केनरा में बस गए थे। इनका जन्म कार्तिक अष्टमी के दिन 19.11.1852 में दक्षिण केनरा के मुल्की के अम्मेबाल गांव में हुआ था। इनके जन्म के बारे में यह भी कह सकते हैं कि इनके जन्म के 5 साल बाद 1857 का 'प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' लड़ा गया था। इसी के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत हुआ और सत्ता-नियंत्रण ब्रिटिश

कठिनाई में गुजरा और 12 वर्ष की अल्पायु में ही इनकी माँ चल बसी और जीवन भर वे मातृत्व-सुख से वंचित रहे। इनकी माता जी के देहांत के बाद इनके पिताजी ने ही घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारी निभाई। वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे, लेकिन पढ़ाई और अनुशासन के मामले में बहुत सख्ती से पेश आते थे। बच्चों की पढ़ाई की सुविधा ना होने के कारण इनके पिता जी परिवार सहित मुल्की से मंगलूरु स्थानांतरित हो गए।



हुकूमत के पास आ गया था। जब सुब्बाराव जी 6 वर्ष के थे तब सन् 1858 में झांसी की रानी युद्ध के दौरान शहीद हो गई थी। इनके पिता का नाम उपेंद्र पै था, जो मुल्की के मुंसिफ कोर्ट में वकालत करते थे। सुब्बाराव जी अपने चार भाइयों में सबसे छोटे थे।

सुब्बाराव जी मुल्की में ही पले-बढ़े और इनकी प्रारंभिक शिक्षा एक शिक्षक वाले स्कूल में हुई। इनका बचपन बहुत

**मेधावी छात्र :-** सुब्बाराव जी बचपन से ही एक मेधावी छात्र थे। जब वह प्रोविंशियल स्कूल में पढ़ते थे, तब एक दो बार तो स्कूल प्रशासन ने मेधावी छात्र होने के कारण उनको डबल प्रमोशन दे दिया था और मात्र 18 वर्ष की आयु में उन्होंने प्रोविंशियल स्कूल की शिक्षा पूर्ण कर ली थी। कहावत है कि पूत के पांव पालने में ही पहचान लिए जाते हैं। 'सुब्बाराव जी की पढ़ाई में रुचि देखकर उनके पिता ने बीए की डिग्री के लिए उनको मद्रास प्रेसिडेंसी कॉलेज भेजने का निर्णय लिया। उन्होंने उस समय के प्रसिद्ध प्रेसिडेंसी कॉलेज मद्रास से बीए की डिग्री प्राप्त की। वह अपने कॉलेज में बीए की परीक्षा में प्रथम आए और पूरे मद्रास में दूसरे नंबर पर रहे। बीए की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने वर्ष 1873 में लॉ कॉलेज मद्रास में एडमिशन लिया और वर्ष 1875 में वे बीएल - बैचलर ऑफ लॉ की परीक्षा में पूरे मद्रास में प्रथम रहे और टॉप किया।

कानून की शिक्षा पूरी करने के बाद वह वकालत करने के लिए मंगलूरु आ गए, जहाँ उनके पिता पहले से ही वकालत करते थे। यह बात जब मंगलूरु वासियों को पता लगी कि इन्होंने बीएल की परीक्षा में मद्रास में टॉप किया है और इन्होंने श्रीमान शेफर्ड (Mr SHEPHARD) के सानिध्य में वकालत के गुरु सीखे हैं और उस समय के मद्रास प्रेसिडेंसी के हाई कोर्ट



के जज होलेवे (HOLLEWAY) से भी इनके अच्छे संबंध हैं, तो इनकी ख्याति शहर में और बढ़ गई।

सुब्बाराव जी शुरू से ही सिद्धांतवादी और न्यायप्रिय व्यक्तित्व के इंसान थे। उन्होंने वकालत के व्यवसाय में नीति शास्त्र और नैतिक मूल्यों का कड़ाई से पालन किया। उन्होंने पैसे और प्रसिद्धि के लालच में कभी भी तुच्छ मुकदमेबाजी नहीं की। वे हमेशा यही सोचते रहते थे कि किस तरह से अपने साथियों की मदद और देश की सेवा में अपना योगदान कर सकूँ। वे किसी भी दुःखी जन की सेवा करने में हमेशा तत्पर रहते थे।

**साहित्य में रुचि :-** सुब्बाराव जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वह साहित्य – प्रेमी थे। उनकी मुख्यतः कन्नड साहित्य में गहन रुचि थी। सामाजिक और नैतिक विषयों पर उनके बहुत से लेख कन्नड पत्रिकाओं में छपते थे। वर्ष 1887 में कन्नड भाषा की पत्रिका 'सुदर्शन' में उनका बहुत चर्चित लेख छपा था – जिसका शीर्षक था 'हिंदू जनाभ्युदय', राइज ऑफ हिंदू पीपल (Rise Of Hindu people)। इस लेख में उन्होंने हिंदू समाज में फैली जातिगत घृणा और दुश्मनी का जमकर विरोध किया और लिखा कि भारत के बहुत से महान संतों का जन्म निम्न जातियों में हुआ है। वे समाज में समानता के पक्षधर थे। वे जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट के प्रशंसक थे और उनके दर्शन से प्रभावित थे। अंग्रेजी साहित्यकार शेक्सपियर उनको बहुत प्रिय थे। उनको मुख्यतः भारतीय इतिहास, अंग्रेजी कविताएं और कालिदास के नाट्यशास्त्र 'अभिज्ञान शाकुंतलम' और 'मेघदूत' में भी रुचि थी।

**अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अन्याय, दमन और अत्याचार :-** युवा सुब्बाराव ने यह महसूस किया कि अंग्रेज और अंग्रेजी शासक भारतीयों पर घोर अत्याचार करते हैं, जिसे देखकर वह बहुत व्यथित हो जाते थे। वकालत करने के दौरान उन्होंने देखा कि उस समय की अदालतें अन्याय व हिंसा में लिप्त दोषी अंग्रेजों को उनकी गोरी चमड़ी देखकर वरी कर देती थी और वहीं भोले-भाले, बेगुनाह भारतीयों को दंडित करती थी। यदि अंग्रेज और भारतीय के झगड़े में किसी भारतीय की हत्या हो जाती थी, तो भी अंग्रेज को न्यायालय द्वारा वरी कर दिया जाता था। अंग्रेज लोग भारतीयों को 'नेटिव' कहकर संबोधित

करते थे, जिससे घृणा और तुच्छता का एहसास होता था। इसलिए सुब्बाराव जी को 'नेटिव' शब्द से बहुत नफरत थी।

**देश-सेवा और समाज-सेवा :-** सुब्बाराव जी वकालत तो कर ही रहे थे, उनकी इस पेशे से कमाई भी बहुत अच्छी थी और उस समय के नामी वकीलो में उनकी गिनती होती थी, लेकिन वे समाज के उत्थान के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे। उनको लगता था कि वह कुछ ऐसा सामाजिक कार्य किया जाये, ताकि लोग शिक्षित और स्वावलम्बी बन सकें। लोगों को दुःखी देखकर उनका मन व्यथित होता था। उनको लगता था यदि हमें अंग्रेजों से लड़ना है, तो शिक्षित और जाग्रत नागरिक उनको अच्छी पटखनी दे सकता है। उस समय साक्षरता के हिसाब से जिले का स्तर बहुत निम्न था। शिक्षा के प्रचार तथा बच्चों की शिक्षा के लिए उस समय की सरकार के पास न तो कोई नीति थी और ना ही नीयत। गौड़ सारस्वत ब्राह्मण समाज के लोग इन विषयों को लेकर काफी चिंतित थे। सुब्बाराव जी को लगता था कि शिक्षा के द्वारा ही समाज के लोगों का उत्थान सम्भव है। सुब्बाराव जी ने अपने जीवन काल में निम्नलिखित संस्थानों की स्थापना की और उनके संचालन में उनकी मुख्य भूमिका रही। ये संस्थाएं थी –



'केनरा हाई स्कूल' केनरा गर्ल्स स्कूल, केनरा हॉस्टल, मंगलूरु संघ, दलित वर्ग मिशन और 'केनरा हिंदू परमानेंट फंड' जो आगे चलकर 'केनरा बैंक' बना।

**केनरा हाई स्कूल :-** जब सुब्बाराव जी मद्रास हाई कोर्ट में वकालत कर रहे थे, तभी यह विचार उनके मन में आया कि क्यों ना अपने जिले में एक स्कूल की स्थापना की जाए, ताकि



मंगलूरु के लोग शिक्षित हो सकें। उनको लगता था कि स्वतंत्रता और स्वावलम्बन के लिए समाज का शिक्षित होना जरूरी है। मंगलूरु आकर यह विचार उन्होंने अपने दोस्तों और समाज के गणमान्य लोगों के समक्ष रखा और 30.06.1891 को 'केनरा हाई स्कूल' की स्थापना हुई।

### बालिकाओं की शिक्षा: दो मुट्ठी अनाज का चमत्कार :-

सुब्बाराव जी बेटियों की शिक्षा के लिए काफी चिंतित थे। उस समय बेटियों को स्कूल भेजने की प्रथा नहीं थी। एक महिला का जीवन जन्म से लेकर अंत तक चुल्हा-चौका और घर की चाहरदीवारी तक ही सीमित था। उनका मानना था कि बेटियों का सशक्तिकरण तभी होगा, जब वे शिक्षित होंगी। उनकी दिली इच्छा थी कि अब समाज की बेटियों के लिए कुछ करना है। लड़कों के लिए 'केनरा हाई स्कूल' की स्थापना हो चुकी थी। अब लड़कियों के स्कूल की योजना उनके दिलो-दिमाग में घूम रही थी। उन्होंने बालिका विद्यालय (गर्ल्स स्कूल) की स्थापना के लिए घरेलू महिलाओं को साथ लिया और अपने समाज की महिलाओं से आह्वान और अनुरोध किया कि जब भी वे सुबह और शाम अपने परिजनों के लिए भोजन पकाती हैं, तो उसमें से एक मुट्ठी अनाज एक घड़े में अलग से रख दें और प्रत्येक शनिवार को स्कूल के लोग हफ्ते भर से घरों में जमा अनाज को बोरी में भरकर ले जाएंगे, जिससे स्कूल के प्रारंभिक खर्च में मदद मिलेगी। इस दो मुट्ठी अनाज का दान किसी भी परिवार को भारी नहीं पड़ा और समाज की बेटियाँ स्कूल जाने लगीं। इस तरह, दो मुट्ठी अनाज और समाज के सहयोग से बालिका विद्यालय (गर्ल्स स्कूल) की स्थापना हुई।

**बैंक खुलने का कारण :-** उस समय दक्षिणी केनरा जिले में कोई भी भारतीय बैंक नहीं था। जिले के व्यापारियों को धन की जरूरत के लिए महाजनों पर आश्रित रहना पड़ता था। जिले में आम आदमी के लिए बचत और ऋण की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। महाजन लोग बहुत अधिक ब्याज पर ऋण देते थे। कभी-कभी तो ब्याज की दर 50% तक की होती थी।

उस समय जिले में केवल 'बैंक ऑफ़ मद्रास' था जो केवल बड़े व्यापारियों को ही ऋण देता था। छोटे व्यापारी जिनको कुछ '100/200 या' 1000 की जरूरत होती थी, उनको बैंक



ऑफ़ मद्रास से मदद नहीं मिलती थी। उस समय के बैंक, ऋण (लोन) के नाम पर आम आदमी का शोषण कर रहे थे। जब जिले में ऋण की ब्याज दर 12% थी, तब भी आम आदमी को बहुत मुश्किल से 15 से 18% की दर पर ऋण (लोन) दिया जाता था।

गौड़ सारस्वत ब्राह्मण समाज में एक और प्रथा थी कि जब भी उनके घरों में किसी बच्चे का जन्म होता था तो परिवार के लोग नवजात के नाम कुछ राशि पत्तन शैट्टी (साहूकार) के पास जमा करा दिया करते थे, जो उस बच्चे के व्यस्क, (18 वर्ष) होने पर लौटा दी जाती थी। पत्तन शैट्टी समाज के प्रतिष्ठित अमीर लोग होते थे। वे जमा-कर्ताओ से राशि मौखिक रूप से जमा करते थे और कोई रसीद भी नहीं देते थे। इस जमा राशि पर जमा-कर्ता को कोई ब्याज भी नहीं मिलता था। पत्तन शैट्टी के मुकर जाने पर या उसके दिवालिया हो जाने पर भोले-भाले जमाकर्ताओं की जमा-पूँजी डूब जाती थी। ऐसे बहुत से जमाकर्ता और विधवाएं न्यायिक सहायता के लिए अक्सर सुबाराव जी के पास आती रहती थी। इस बुरी प्रथा से भोले-भाले जमाकर्ताओं को कैसे बचाया जाए, यह बात भी सुब्बाराव जी के दिमाग में घूमती रहती थी।

**केनरा हिंदू पर्मानेंट फंड :-** आम आदमी को इन्हीं समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'केनरा हिंदू पर्मानेंट फंड' की



स्थापना का विचार उनके मन में उपजा। उन्होंने उस समय जिले में कार्यरत फंड और बैंको की कार्यप्रणाली का अध्ययन किया और उनके आर्टिकल ऑफ एसोसिएशन (Article of Association) की जानकारी ली। उन्होंने उस समय के कार्यरत 'मदुरई हिंदू पर्मानेंट फंड' की तर्ज पर ही एक फंड बनाने का फैसला किया। लेकिन जिस 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की संकल्पना और संकल्प से वे 'हिंदू पर्मानेंट फंड' बनाना चाहते थे, उसको ध्यान में रखते हुए उन्होंने 'हिंदू पर्मानेंट फंड' के आर्टिकल ऑफ एसोसिएशन में बदलाव किया, जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी था। वह यह था कि ऋण की ब्याज-दर 10% से अधिक नहीं होगी, जबकि उस समय ऋण की ब्याज-दर 15 से 20 प्रतिशत तक थी। सुब्बाराव जी शुरुआत से फंड का उद्देश्य कम ब्याज दर पर छोटे और मझोले व्यापारी और कारीगरों को ऋण और बचत की सुविधा मुहैया कराना था। वे चाहते थे कि बैंकिंग सेवाएं समाज के सभी नागरिकों को बिना किसी सामाजिक और आर्थिक भेदभाव के मिले।

सुब्बाराव जी उच्च कोटि के कर्मयोगी, दूरदर्शी, समाजसेवी, लोक-हितैषी, उदार और देश-भक्त थे। उन्होंने छोटे और मझोले किसान / व्यापारी / कारीगरों और जमाकर्ताओं की सुविधा के लिए दिनांक 1.7.1906 को मंगलूरु में 'केनरा हिंदू पर्मानेंट फंड' की स्थापना की जो आगे चलकर 'केनरा बैंक' बना। सुब्बाराव जी ने 57 साल की अल्पायु में ही ऐसी संस्थाओं का निर्माण किया जो आज भी कार्यरत है; उनमें से एक है-हमारा बैंक-केनरा बैंक।

सुब्बाराव जी जब वयस्क थे तभी उनको गठिया रोग (Arthritis) लग गया था, जो अंत में उनके लिए जान लेवा साबित हुआ और 25.07.1909 को ओम नारायण, ओम नारायण का जप करते हुए उन्होंने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।

**सारांश :-** श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै जी ने अपने जीवन-काल में ही समझ लिया था कि सभी देशवासियों को शिक्षा और समानता के अधिकार प्राप्त होने पर ही देश स्वावलम्बी और स्वतंत्र हो सकता है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद देशवासियों



को सामाजिक और आर्थिक समानता दिलाने के लिए हमारे नेताओं ने जो अभियान चलाए जैसे - सर्व शिक्षा अभियान, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, वित्तीय समावेशन, बैंकिंग का अधिकार, छोटे और मझोले कारीगर / व्यवसायी को कम ब्याज-दर पर ऋण की सुविधा आदि, उस महान क्रांतिकारी सामाजिक और आर्थिक बदलाव की शुरुआत, हमारे बैंक के संस्थापक, महानायक व दूरदृष्ट अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै ने सन् 1891 में ही कर दी थी। बैंकिंग के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्होंने 1906 में 'केनरा हिंदू पर्मानेंट फंड' की स्थापना की, जो आज 'केनरा बैंक' के रूप में एक विशाल वट-वृक्ष बनकर हम सब केनेराइट्स को और करोड़ों ग्राहक को जीवनाश्रय दे रहा है और 1 अप्रैल, 2020 से केनरा बैंक में सिंडिकेट बैंक के समामेलन के बाद अब 'एक और एक ग्यारह' की ताकत से देश सेवा में समर्पित है।

आइये ! हम सब मेरा बैंक मेरी शान, केनरा बैंक के 115वें संस्थापक दिवस पर संकल्प लें कि हम पूरी आस्था और दृढ़ता के साथ श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै जी के दिखाए हुए मार्ग पर अनवरत चलते रहेंगे और समाज और देश सेवा में समर्पित रहेंगे।





### अहमदाबाद

दिनांक 02/10/2020 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 151वीं जयंती के अवसर पर, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के महा प्रबंधक श्री प्रणय रंजन देव ने कार्यालय के अन्य कार्यपालकों के साथ नवजीवन प्रेस रोड पर सफाई करते हुए अपने आस-पास के क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दिया। महाप्रबंधक महोदय ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आस-पास की सफाई करना ही नहीं बल्कि हम सभी को अधिक से अधिक वृक्षारोपण एवं कचरा मुक्त वातावरण बनाने का प्रयास भी करना चाहिए।



### भुवनेश्वर

दिनांक 27 अक्टूबर 2020 से 02 नवम्बर 2020 तक अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर, विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों एवं शाखाओं में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020 मनाया गया। इसके दौरान अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में ऑनलाइन ग्राहक - बैठक आयोजित की गई एवं अंचल कार्यालय के कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। समापन के दिन श्री बी एल मीना, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई और इस



कार्यक्रम में श्री ललित दास (आईपीएस), अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस (कार्मिक), ओडीशा, कट्टक को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

### दिल्ली

दिनांक 19/11/2020 को अंचल कार्यालय, दिल्ली में संस्थापक दिवस मनाया गया। हमारे महाप्रबंधक श्री अभय कुमार, उपमहाप्रबंधक श्री कल्याण द्वारा संस्थापक की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किया गया। इस शुभ अवसर पर बैंक ने सीएसआर गतिविधि के तहत एक ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन दिल्ली को एक वाणिज्यिक फ्रिज प्रदान किया।



### जयपुर

अंचल कार्यालय, जयपुर में दिनांक 19.11.2020 को श्री अरुण कुमार आर्या, उप महा प्रबंधक, श्री अजय सिंह नेगी, उप महा प्रबंधक, श्री जे एस निगम, सहायक महा प्रबंधक, श्री हरकेश्वर प्रसाद, सहायक महा प्रबंधक सहित सभी कार्यपालकगण एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों की उपस्थिति में 115वां संस्थापक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी कार्यपालकों एवं अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा बैंक के संस्थापक परम श्रद्धेय श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पण किया गया।





### कोलकाता

श्री देबाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक एवं श्री सी जी साहा, महा प्रबंधक एवं अंचल प्रमुख के कुशल मार्गदर्शन एवं सहभागिता में अंचल कार्यालय कोलकाता में दिनांक 13 मार्च 2020 को विशिष्ट ग्राहकों से बातचीत सत्र व मेगा कैन अदालत का आयोजन किया गया। आयोजन में श्रीमती गीतिका शर्मा, उप महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, कोलकाता, श्री ए सी साहू, उप महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, कोलकाता, श्री एस के दास, सहायक महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, कोलकाता, श्री अशोक कुमार मेहर, अंचल कार्यालय, कोलकाता भी उपस्थित रहे।



### मुम्बई

अंचल कार्यालय, मुम्बई में दिनांक 19.11.2020 को मुख्य महा प्रबंधक श्री पी संतोष, महा प्रबंधक श्री डी पालनीस्वामी, महा प्रबंधक श्री लखबीर सिंह, सभी कार्यालयकगण, सभी स्टाफ-सदस्य एवं ग्राहकों की उपस्थिति में 115वां संस्थापक दिवस मनाया गया। इसके दौरान सभी कार्यपालकों एवं अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा बैंक के संस्थापक परम श्रद्धेय श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पण किया गया।



### पटना

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर, दिनांक 20 अक्टूबर 2020 को केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय मुजफ्फरपुर में केनरा बैंक रिटेल उत्सव (अक्टूबर 2020 से जनवरी 2021) के दौरान एक मेगा रिटेल एक्स्पो 2020 का आयोजन किया गया। अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक श्री फ्रेंल्लिन सेल्वकुमार ए द्वारा दीप प्रज्वलन करके रिटेल एक्स्पो का शुभारंभ किया गया। रिटेल क्षेत्र में, विशेषकर, आवास ऋण, वाहन ऋण एवं शिक्षा ऋण को प्रोत्साहित करने हेतु मुजफ्फरपुर जिला के अंतर्गत 16 शाखाओं के लिए विशेष रिटेल असेट हब (आरएएच) की स्थापना की गई है।



### पुणे

दिनांक 18.11.2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे -I में दिसंबर 2020 तिमाही हेतु “कारोबार प्रतिनिधियों (बैंक मित्रों) के माध्यम से कारोबार विकास की व्याप्ति “विषय पर परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री राजू पी वी, सहायक महा प्रबंधक व क्षेत्रीय प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सुश्री सुप्रिया एस देसाई, मंडल प्रबंधक और क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।





### आगरा



केनरा बैंक, सामाजिक उत्तरदायित्व की गतिविधियों के लिए पूरे भारत वर्ष में एक जाना पहचाना नाम है। इसी श्रेणी में बैंक द्वारा दिनांक 31.10.2020 को कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत नारी निकेतन संस्थान, आगरा को मुख्य विकास अधिकारी सुश्री जे रीभा (आई ए एस) आगरा, श्री एस वासुदेव शर्मा, महा प्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, आगरा की मौजूदगी में गीज़र, रूम हीटर, लेडीस शॉल, गर्म कंबल वितरित किए गए।

### चंडीगढ़



दिनांक 13.10.2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में महा प्रबंधक श्री बी पी जाटव, अंचल कार्यालय, चंडीगढ़, उप महा प्रबंधक श्री सुच्चा राम और क्षेत्रीय प्रमुख एवं उप महा प्रबंधक श्री प्रदीप के एस के मार्गदर्शन में 'रिटेल एक्स्पो' का आयोजन किया गया। एक्स्पो के दौरान ग्राहकों को आवास ऋण, कार ऋण और केनरा मोर्टगेज केमंजूरी पत्र प्रदान किए गए।

### करनाल



अंचल कार्यालय, करनाल में द्वारा दिनांक 22.10.2020 को सितंबर 2020 तिमाही की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय प्रमुख तथा अंचल कार्यालय के अंतर्गत आनेवाली शाखाओं के प्रमुख शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता श्रीमती सी एस विजयलक्ष्मी, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा की गई। इस अवसर पर उप महा प्रबंधक श्री संजय कुमार डबराल तथा अंचल कार्यालय के अन्य कार्यपालकगण उपस्थित हुए। इस अवसर पर श्रीमती के कल्याणी, महा प्रबंधक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु ने वीडियो कांफ्रेंस द्वारा बैठक को संबोधित किया।



राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

— महात्मा गांधी



## WHY CANARA BANK IS A SUCCESS STORY?



**K.P. Ramesh Rao,**  
Ex-Employee  
Canara Bank

*"If you could get all the people in the organisation rowing in the same direction, you could dominate any industry, in any market, against any competition, at any time"*  
- Patrick Lencioni

### Success comes with a price:

Today we live in a world of giant corporations and mega business houses. At one time we simply called them institutions or organisations. These institutions and organisations were very small undertakings to start with. Gradually they grew and became big enterprises or entities. Many of course fell by the wayside and disappeared. Such unfortunate institutions were mostly ill managed, ill organised or had no strength to adapt to changing times. Those who succeeded, grew and thrived to their full potential and made a mark in history.

### Organisation is "people"

But what is an organisation? An organisation is a material entity which has no life by itself. It gets life and identity because of the people it incorporates within. When one says 'This is a good bank' or 'This bank cares for its customers' it does not mean the building and the furniture are good or they care for people. It means the human element within its premises are sensitive to people's visit and needs. Courtesy, promptness, listening to customers' problems, suggesting solutions within the framework available, making the customers feel important and worthy go a long way in etching an image of a 'live and responsive organisation' in the mind of the customer. "An organization, no matter how well designed, is only as good as the people who work in it" goes a management saying.

### Clarity of Vision and Mission:

Now, for an organisation to grow, progress and prosper, it has to be alive to its customers besides having enough strength and resilience to change according to demands of time and circumstances. These two things must be hardwired into an organisation's DNA for it to stand

steadfast against all vagaries. The founding principles of an organisation usually provide an insight into its short and long term goals. These founding principles provide a clear charter and well defined perspective for the organisation to move forward and in greater resolve without losing track. As in an individual's life, in the life of an organisation too there should be clarity of vision and mission.

### The banking scene before Canara Bank starts:

Canara Bank was founded early last millennium. All these more than a hundred years its success has been phenomenal, despite periodic economic and political upheavals and global turmoil. The time it was started in, however, was relatively calm politically, the British rule in the country having been firmly established. Though no explicit founding principles were envisaged at the time, it was patent that the Bank must work towards those ordinary people of the society who needed financial help to start, run, continue or keep up their vocations and livelihood. There were some uncertainties about the future of Arbuthnot Bank of the Madras Presidency, which was one of the largest banks in the region at the time. It was a European Bank and had many patrons in rich people, and was not overtly enthusiastic about the banking needs of common people. Yet, a shaky big tree threatens smaller trees around. The banking community in the south was worried indeed about the impending banking disaster.

### Canara Bank takes roots:

There was, however, one man who foresaw a bleak scenario for the poor and the middle class people and thought of starting a financial establishment to help them. The idea was to charge sustainable rate of interest on loans to these class of people and at the same time receive deposits on moderate rate of interest to muster funds. Sri Ammembal Subba Rao Pai, our founder took on himself to reach every local individual and family and explain the new venture, which ultimately benefited



them financially and of course socially by inculcating a group spirit. He travelled on a bullock cart door to door to visit people and built up goodwill and support for the new venture. A philanthropist and social worker himself, it was not difficult for him to convince the mass and they readily participated in his plans without second thoughts. Canara Bank has taken roots.

#### Clear goals:

"To accomplish great things, one must not only act, but also dream; not only plan, but also believe," said Anatole France. Our founder did not have only debit and credit, deposits and loans, profit and gain in mind. He had a much larger vision of uplifting the disadvantaged - be it the poor or the ignorant or women - and bringing about social change for the better in whatever manner possible. What is now touted as Corporate Social Responsibility was practiced by him and his institution, in the early 20th century. What was then called duties and responsibilities of a bank is now called Mission

Charter! The founding principles of our bank as envisaged by our predecessors gave more prominence to the prevailing social condition of the society and the objective was to transform the financial institution as not only the financial heart of the community but also the social heart as well.

Of course, they wanted to do banking but not being blind to the overall social and economic backwardness all around. This social responsibility was much later termed by political and economic pundits as social banking. Canara Bank had both prudence and foresight to practice 'social banking' decades before the term gained currency. The very work culture of Canara Bank was well attuned to this idea of 'business with humaneness' from day one, which always reflected in its exemplary customer service and social concerns. If today our Bank has written a great success story for itself it is because our Bank has an efficient organisational setup and customer good will built up over more than a century.



## मौन की शक्ति

खामोशी में जो है आवाज़ ।  
सन्नाटे में है जैसा शोर ।  
शब्दों में वैसा वज़न कहाँ ॥

सोच समझ कर बोलना एक कला ।  
मौन में है संदेश प्रभुता का ॥

वाक्य उलझन है ।  
तो मौन सुलझन है ॥

समय, आसमान, अंतरिक्ष, सभी है मौन ।  
मौन की ध्वनि को सुनता है कौन ॥

मौन में ऐसी शक्ति जो करे ।  
मन केंद्रित व क्रोध नियंत्रित ॥

पूनम गुलाटी  
अधिकारी

जोखिम प्रबंधन अनुभाग  
अंचल कार्यालय, बेंगलूरु



मौन जगाये सकारात्मक ऊर्जा ।  
रोमांचित करे शरीर का पुर्जा - पुर्जा ॥

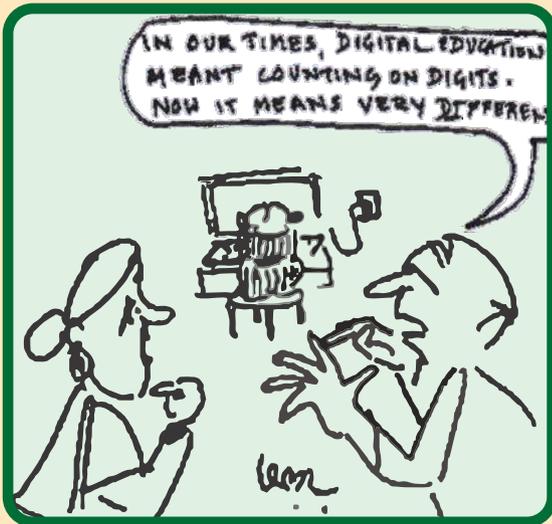
खामोशी में है ऐसे सुवचन ।  
जिसका हमें अभिज्ञान नहीं ॥

मौन बनाता है अंतर्मुखी, अंतर्गामी ।  
ले जाता है कल्पना की उड़ान पर ॥

मौन देता है अवसर भीतर जाने का ।  
ध्यान लगाने का, भगवान को पाने का ॥

“मौन से मन जीता, तो जग जीता”





Refer to "drawer" by:  
K P Ramesh Rao





# वैश्वीकरण और राजभाषा हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं का भविष्य



अनीता रैन  
भूतपूर्व कर्मचारी  
केनरा बैंक

वर्षों की गुलामी के बर्फीले मेघ पुंज को चीरकर 14 सितंबर 1949 में आज़ादी का शिशु सूर्य चोंच में दबाए क्षत-विक्षत पंखों वाला, जो जुझारू झंझा पक्षी भारत की संविधान सभा में उतरा था, निश्चय ही उसकी आंखों में चमक थी, वह चमक थी खुले निरभ्र आसमां में चैन की सांस लेने की जिसने सदियों से चले आ रहे विवादों के कटघरे से निकल सफलता के मार्ग पर प्रशस्त होने का सुंदर परिचय दिया और हिन्दी को राजभाषा का गौरवमय स्थान प्राप्त हो गया।

राष्ट्रीयता के प्रतीक के रूप में जिस प्रकार राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का महत्व होता है उसी प्रकार राष्ट्र की अस्मिता के लिए उसकी राजभाषा का। गांधी जी के कथनानुसार “राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के बिना देश गूंगा होता है”। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं अपितु एक भाव है वह देश की संस्कृति, सभ्यता व स्वतंत्रता की प्रतीक भी है। स्वतंत्रता आंदोलन के समुद्र मंथन में अनेक बहुमूल्य रत्न निकले जिसमें हिन्दी भी एक है। जो भारत-वाणी बनकर सबको एक सूत्र में पिरोने की भूमिका के रूप में प्रयुक्त है। अपनी भाषा में उस देश की मिट्टी की जो गंध मिलती है वह किसी भी परकीय भाषा में नहीं मिल पाती, चाहे वह कितनी ही प्रभावशाली सम्पन्न भाषा हो। पर हिन्दी की बात करते समय अपनी बात को भाषा तक सीमित करना वस्तुतः हिन्दी के स्वरूप को सीमित करना है।

कहना न होगा, हिन्दी तर्क नहीं प्यार है,  
स्थिर सिंधु नहीं – अविरल-गतिशील जलधार है।

जब हम विश्व के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की बात करते हैं तो स्वभाविक रूप से उसकी शक्ति के आधार को समझा जाना चाहिए जिससे वह निरंतर अपना जीवन रस प्राप्त करती रहे और पूरे विश्व में प्रसारित होती रहे। विश्व में संख्या की दृष्टि से हिन्दी भाषा-भाषियों का स्थान तीसरा है, नब्बे करोड़

भाषा-भाषी हिन्दी जानते हैं।

यही कारण है कि भारत के बाहर फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे लाखों प्रवासी मातृभाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। हिन्दी को विश्व में पहला स्थान दिलाने के प्रयास जारी हैं। बुद्धि जीवियों ने चीनी भाषा को जानने वालों की संख्या के आधार पर गणना की तो पाया चीन में लगभग 40 मिलियन आबादी तिब्बती भाषा भाषियों की है हालांकि चीनी भाषा एवं साहित्य विश्व में प्राचीनतम सभ्यताओं में से है। सर्वेक्षण के अनुसार यह पाया गया कि हिन्दी जानने वाले सर्वाधिक हैं इस प्रकार गर्व करने को कई बातें हैं फिर भी एक यक्ष प्रश्न बना ही रहता है कि अंग्रेजी क्यों अभी तक इस देश में विराजमान है? क्यों दिन प्रति-दिन प्रतिस्पर्धाओं के जाल में उलझती जा रही है इसका एक कारण उच्च प्रौद्योगिकी और दूसरा देशवासियों के कुछ वर्गों की संकीर्ण मानसिकता। यह भी कहा जाता है कि अंग्रेजी ही अदालत के लिए उपयुक्त भाषा है पर कानून नागरिकों की समस्याओं के लिए बनते हैं। यह भी तो सच है कि हमारे जीवन से जैसे हमारी भाषा जुड़ी है वैसी विदेशी भाषा नहीं हो सकती। हमें नए को अपनाना चाहिए पर वह नया ऐसा न हो कि हमें गुलाम मानसिकता का शिकार बना दे, हमारी धरती से हमारे पग उखड़ जाए। “गांधी जी ने कहा था” मैं अपने घर के खिड़की दरवाजे खुले रखना चाहता हूँ ताकि बाहर से हवा आ सके, पर वह हवा ऐसी आंधी न बन जाए कि हमारे पैर हमारी ही धरती से उखड़ जाए।

आज भारत वर्ष को स्वतंत्र हुए 72 वर्ष हो गए हैं हिन्दी को संघ की राजभाषा बने 70 वर्ष। हमसे एक चूक यह हो गई हम हिन्दी की ही बात करते रहे। हिन्दी की गाड़ी को अकेले ही खींचना चाहते रहे उसे मान सम्मान ज्ञात-अज्ञात रूप में देते आ रहे हैं पर वास्तव में हम स्वयं भी राष्ट्रभाषा व राजभाषा के



अंतर को समझ नहीं पाए व समझना नहीं चाहते। शब्द निर्माण में भी हमने संस्कृत – भाषा को आधार बनाया जिससे हिन्दी में दुरूहता व जटिलता आ गई और लोग हिन्दी से कतराने लगे। जब दोनों भाषाओं की बोझिल शब्दावली से काम न बना तो अंग्रेजी का मुंह ताकने लगे कि यही हमें वैश्वीकरण की ओर बढ़ते युग की पहचान कराएगी पर हम भूल गए हमारे पास एक नहीं अनेक क्षेत्रीय भाषाएं हैं, बोलियां हैं। आठवीं अनुसूची में क्षेत्रीय भाषाओं असमिया, उडिया, उर्दू, कन्नड, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिंधी, हिन्दी, कोंकणी, नेपाली, मणिपुरी, मैथिली आदि को स्थान देकर हमने अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली। संविधान निर्माताओं ने क्षेत्रीय भाषाओं के विकास, प्रचार एवं प्रसार का सारा दायित्व सम्बन्धित राज्यों के सुपुर्द कर दिया तथा संघ की राजभाषा हिन्दी को मान्यता प्रदान कर दी। संविधान के अनुच्छेद 345, 346 व 347 में प्रादेशिक भाषाओं के समुचित विकास एवं प्रयोग के लिए प्रावधान किया गया है। व्यावहारिक पहलू के मद्देनजर हमें पत्र-व्यवहार क्षेत्रीय भाषा में ही करने चाहिए। यदि हम वास्तव में हिन्दी के प्रचार व प्रसार को बढ़ावा देना चाहते हैं तो हमें समस्त क्षेत्रीय भाषाओं के फूलों को हिन्दी की माला में गूंथना होगा। यदि आवश्यक हो तो संविधान में परिवर्तन भी कर लेने चाहिए और उन क्षेत्रों का निर्धारण कर लेना चाहिए जहां केवल हिन्दी में कार्य किया जाएगा। साथ ही उन क्षेत्रों का चयन भी कर लेना चाहिए जहां केवल क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग ही मान्य होगा। हो सकता है यह सुझाव मात्र सैद्धांतिक मान कर स्वीकार न किया जाए। मंजिलें अगर आसान होती तो रास्तों का जिक्र न होता, देश पर्यन्त एक विशाल दल हिन्दी के रथ को चलाने में लगा हुआ है। यदि क्षेत्रीय भाषाओं को भी रथ में जोड़ा जाता तो सर्वथा हिन्दी प्रयोग को भी गति मिलती। हमें अपनी महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठना होगा। हिन्दी के शब्द भण्डार को क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द भण्डार से भरना होगा। ऐसी भाषाओं से हिन्दी को मंडित करना होगा जिन भाषाओं में अपने राष्ट्र की अपनी अस्मिता की सही पहचान हो सके सम्भवतः तभी हम इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना कर सकेंगे।

हम भूल गए हैं कि स्वाधीनता के बहुत पहले से ही गुजराती

भाषी दयानंद सरस्वती, पंजाबी लाला लाजपत राय बांग्ला भाषी केशवचन्द्र सेन जैसी विभूतियों ने हिन्दी को राजभाषा से पूर्व राष्ट्र की जन भाषा का स्वरूप प्रदान करने में सफलता पायी थी, स्वामी दयानंद जी ने भी 'सत्यार्थ प्रकाश' को शुद्ध हिन्दी में प्रकाशित किया। दूसरा संस्करण तथा भारत की प्रादेशिक भाषाओं की एक लिपि होने की कल्पना की उनके यह शब्द हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाते हैं – “मेरी आंखें तो उस दिन को तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी भारतीय भाषाओं की एक लिपि होगी और सब एक ही भाषा को समझने व बोलने लगेंगे। यही नहीं हिन्दी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक राजनैतिक पृष्ठ भूमि रही है। मथुरा की कृष्ण लीलाएं, अयोध्या की राम गाथाएं मणिपुर से केरल, पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत से तमिलनाडु तक द्वारिका से जगन्नाथपुरी तक महीनों पैदल चल रहे तीर्थयात्रियों के मध्य संपर्क सूत्र बनी, जो किसी की कृपा की मोहताज नहीं थी। आचार्य बिनोवा भावे ने भी गांधी जी के सूत्र को पकड़ कर हिन्दी के साथ एक देवनागरी लिपि पर जोर दिया और कहा कि यदि हिन्दुस्तान की सभी भाषाओं के लिए एक नागरी लिपि चल पड़े तो हम सब लोग एक दूसरे के नजदीक आ जाएंगे और दक्षिण की भाषाएं भी आसानी से सीख सकेंगे चारों भाषाओं में काफी समानता है लेकिन लिपि के कारण ये परस्पर कटी हुई हैं। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए एक देवनागरी लिपि का होना अति आवश्यक है क्षेत्रीय भाषाओं के विस्तृत स्वरूप के अध्ययन से हम जान सकते हैं कि उसमें हिन्दी के प्रति कितनी आस्था व निष्ठा है। अरूणाचल प्रदेश, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, इन सात राज्यों के क्षेत्र को सात बहनों का प्रदेश कहा जाता है जहां हिन्दी का विकास व प्रचार केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के विशेष प्रयासों से हुआ। दिल्ली, गुवाहटी, हैदराबाद, शिलांग, मैसूर के अन्तर्गत कई अध्यापन प्रशिक्षण महाविद्यालय चलाए जा रहे हैं।

इन प्रदेशों की भाषायी अस्मिता के भावात्मक पक्ष को भी ध्यान में रखते हुए एक ओर इनकी अपनी भाषाओं के विकास के लिए कार्य किया दूसरी ओर संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण व विकास के लिए विशेष प्रयास किए गए, जिससे इन्हें वैश्वीकरण की धारा के साथ भी जोड़ा जा सके। संक्षेप



में पूरी स्थिति की जो झलक दिखायी देती है उसके अनुसार हिन्दी की दृष्टि में मिजोरम व मणिपुर आगे हैं, त्रिपुरा में सुधार की आवश्यकता है, मीडिया व सैन्य बलों के कारण हिन्दी विस्तार पा रही है। अंतर्राष्ट्रीय महत्वानुसार वर्तमान हिन्दी क्षेत्र मध्यदेश का मेरूदंड है जिसकी सफलता का सेहरा शासन और धनाढ्य वर्ग को नहीं अपितु निर्धन व शोषित वर्ग को जाता है वे लोग कुली, मजदूर बनकर, कृषक बनकर मॉरीशस, गुयाना, फिजी आदि गए लेकिन हिन्दी को कंठहार बनाये रखा। भारत के व्यापारियों का एक वर्ग ब्रिटेन, अमेरिका, जर्मनी, जापान, थाइलैंड, सिंगापुर आदि दूर-निकट के देशों में उच्च शिक्षा व व्यापार हेतु गया, किन्तु उनकी भाषा व संस्कृति से प्रेम कम नहीं हुई। समय-समय पर आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं- जहां अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले विद्वानों के योगदान को सभी के समक्ष सराहा गया।

21वीं सदी का आर्थिक, व्यापारिक, व्यावसायिक औद्योगिक एवं बाजार परिदृश्य, अन्तर्राष्ट्रीय-वैश्विक स्वरूप और प्रकृति की प्राप्ति की ओर अग्रसर दिखाई दे रहा है। विश्व के सभी देश नियमों, अधिनियमों में महत्वपूर्ण परिवर्तन व बदलाव ला रहे हैं तथा बदलते व्यावसायिक परिदृश्य में अपने व अपनी भाषा की रक्षा के लिए उसके उत्तरोत्तर विकास के लिए प्रयत्नशील हैं, भारत व भारत की भाषाएं इससे अछूती नहीं हैं। निकट भविष्य में कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों की संभावना लिए हैं।

इस प्रतिस्पर्धा में वही टिक सकेगा जो वैश्वीकरण की सरसरारहट एवं पदचाप को सुनने व महसूस करने में समर्थ होगा।

विश्व इतिहास में वही राज्य या देश शक्तिशाली माना जाता है जिसके पास सैन्य बल हो या अर्थ बल हो किन्तु आज वह देश शक्तिशाली है जिसके पास भाषाई एकता हो साथ ही उच्च प्रौद्योगिकी हो। आज विश्व जबरदस्त सूचना प्रौद्योगिकी के दौर से गुजर रहा है, जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। टैलीमैक्स (कम्प्यूटर+ संचार) विज्ञान ने समूचे विश्व को समेटकर असीम से ससीम कर दिया है जिससे हिन्दी के

प्रयोग की संभावनाएं बलवती हुई हैं – कहना न होगा कि –

“अपने अद्भुत आविष्कारों से, कर दिया चकित जहान,  
घर-घर उल्लास उर्मियां नाची, मुश्किल हुई आसान”

निः सन्देह ज्ञान के विपुल भण्डार को समेटने व संजोने और मानवमात्र के लिए सुलभ कराने में कम्प्यूटर का योगदान असाधारण है।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह सोचना अनिवार्य हो गया है कि जन-साधारण को इसका लाभ पहुंचाना है तो इसे भारतीय भाषाओं में सुलभ कराना होगा। चूंकि विविधता में एकता केवल भारतीय भाषाओं तथा उनकी लिपियों की मूलभूत विशेषता है तथा इनमें अन्तर्निहित समानता के आधार पर ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की भावना से ही नई प्रौद्योगिकी का विकास तीव्रगति से होता आ रहा है।

यह भी सच है कि कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त लिपि देवनागरी है, यदि एक बार कम्प्यूटर में हिन्दी में काम करने की सुविधा प्रचार की सामग्री उपलब्ध हो जाए तो अंग्रेजी के वर्चस्व को टूटने में देर नहीं लगेगी। अभी वडर्स प्रोसेसिंग का कार्य प्रगति पर है कम्प्यूटर की सभी विधाओं में भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा डाट कॉम, नामक वेबसाइट तैयार की गई है जिसका उद्घाटन गृहमंत्री व उपप्रधान मंत्री श्री आडवाणी जी के कर कमलों से सहस्राब्दि विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर हुआ। इसमें राजभाषा के सभी नियमों, अधिनियमों की जानकारी दी गई है। इसके अतिरिक्त हिन्दी व्याकरण सीखने के साथ-साथ हिन्दी सॉफ्टवेयर का ऑनलाइन प्रशिक्षण भी वेबसाइट के माध्यम से लिया जा सकता है। ([www.rajbhasha.com](http://www.rajbhasha.com)) इसका संपादन डा. राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता द्वारा किया गया था।

यही नहीं दुनिया की सभी भाषाओं के लिए भारतीय सेना के एक रिटायर्ड कर्नल ‘पाटिल’ ने ध्वनि, आधारित एक लिपि तैयार की है जिससे सभी भाषाएं भी एक लिपि के अन्तर्गत आ जाएंगी तथा उच्चारण भी शुद्ध हो जाएगा। इसके लिए देवनागरी से अधिक उपयुक्त कोई लिपि नहीं है।



शिक्षा विभाग ने भी शिक्षा संबंधी तमाम जानकारियों के साथ एक पोर्टल तैयार किया है जिसका द्विभाषीकरण का कार्य प्रगति पर है। यही नहीं, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से सी-डेक के ए.ए.आई ग्रुप नेमी 'मैत्र' नाम से एक ऐसी स्वचालित मशीनी अनुवाद प्रणाली भी विकसित की है। इसके अतिरिक्त 'अक्षर' 'शब्दरत्न' भी लोकप्रिय है। यह पड़ाव अभी खत्म नहीं हुआ है मंजिलें और भी हैं बस रास्तों का जिक्र होना बाकी है।

जयपुर की एक कम्पनी ने बैंक मेट (Mate) पैकेज तैयार किया है जिसका उपयोग "पंजाब नेशनल बैंक" की जयपुर शाखा में हो रहा है जिससे शाखा के पूरे कार्य को द्विभाषी किया जा सकता है। नई शाखा को तो पूर्णतः लैस कर सकते हैं। यह लाखों का पैकेज है, जिसे प्रयोग में लाया जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब हमारी भाषा नई प्रौद्योगिकी को अपनाकर विश्व में गौरव मय स्थान प्राप्त करेगी।

टेलीफोन की दुनिया में नई शुरुआत करते हुए एक भारतीय व्यवसायी ने विश्व भर में हिन्दी, पंजाबी, तमिल, बांग्ला, गुजराती, और उर्दु भाषी समुदायों के लिए आठ-टीवी चैनल शुरू किए हैं जिनका लक्ष्य है आस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, यूरोप और दक्षिण एशिया के 20 करोड़ घरों तक पहुंचना तथा उन्हें मातृभूमि से जोड़ने का सफल प्रयास करना।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हिन्दी भारत में ही नहीं अपितु विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वैश्विक परिदृश्य में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। यहां तक कि उत्पाद की बिक्री के लिए भी हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को ही प्रयोग में लाया जा रहा है। भारत में असीम क्षमताएं हैं अनन्त संभावनाएं हैं। अतः ऐसे में गर्व की बात होगी कि हम राजभाषा व क्षेत्रीय भाषाओं के साथ स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करें तथा वैश्वीकरण के दौर में अपनी अस्मिता को बचाए व बनाए रखने की आक्रामक पहल करें।

संक्षेप रूप में स्वरचित कविता के रूप में

हिन्दी की पद यात्रा

नए अंकुर ढोते हैं किरिचों पर जब कोई  
किसी नई दिशा के मोड़ मुखरित होने लगते हैं,  
जहन में एकाएक

आठवीं शताब्दी से आरम्भ इसका,  
देखो प्रगति कैसी कर रहा  
दिल्ली में जन्मी, साधु,  
सन्तों पीर फकीरों के पालने झूली  
उन्नीसवें उत्तरार्द्ध में आर्यसमाज संग पली बढी  
बीसवीं सदी में फली-फूली  
आकाशवाणी के सानिध्य में राष्ट्रवाणी बन उभरी  
14 सितंबर 1949 में राजभाषा स्वीकारा गया  
जन-जन की संपर्क भाषा हिन्दी को सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया  
पंत-निराला, महादेवी बच्चन,  
गुप्त दिनकर और नवीन  
तुलसी, सूर, मीरा, रसखान, नानक कबीर से कवियों ने  
शब्दों से प्यार जगाया था। इन रचनाकारों की छवियों ने  
क्या राष्ट्रीय? क्या अंतर्राष्ट्रीय  
कहां नहीं पहुंची यह  
हिन्दी भाषी तो हिन्दीभाषी, अहिन्दी भाषियों का योगदान भी  
कुछ कम नहीं - केशव दयानंद, गांधी, तिलक-बिनोवा  
और गोपालाचारी  
बंगाली, गुजराती, मराठी, और दक्षिण भारती  
किसी ने नहीं चलने दी राष्ट्रभाषा पर आरी  
कलम के धुरंधरों ने ऐसी आवाज उठाई  
जिसके आगे अंग्रेजियत की कूटनीति थर्राई  
सात बहनों के प्रदेश में -----  
सभी राज्य हैं भाई-भाई  
राष्ट्रीय एकता की प्रतीक हिन्दी ही सबके मन में समाई  
वैश्वीकरण की नित नई चुनौतियों को  
आगे बढ़कर स्वीकार करें।  
हिन्दी के प्रचार-प्रसार के समर्थकों का  
आओ मिलकर सम्मान करें।  
नई प्रौद्योगिकी के इस वट वृक्ष को  
आओ मिलकर सींचा करें।  
लीला प्रबोध शब्द-रत्न अक्षर मैट  
यूनीकोड सभी हम सीखा करें  
विश्व-जगत में राष्ट्रभाषा राष्ट्रध्वज  
का मस्तक हम ऊंचा करें।

अंततः मैं कहना चाहूंगी वैश्वीकरण राजभाषा हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं का समन्वित रूप ही हमारी शक्ति है हमारा सामर्थ्य है।



- 1) **1852** - Sri. Subba Rao Pai was born on 19th November in Mulki, a place not far from a village called Ammebal.
- 2) **Upendra Pai** - was a vakil practicing in the Munsif's court at Mulki. Sri. Subba Rao Pai was the youngest of the 4 sons born to him.
- 3) **Tamil** - Sri. Subba Rao Pai had a fabulous memory and a gift for learning language. During his stay in Madras as a student of Presidency College, he learnt Tamil and even speak fluently.



Presidency college

- 4) **Moral & Mental Philosophy, History & Mathematics** - Our founder studied the subjects at the Presidency College, then the premier college in Madras, under Dr Duncan, History under T Gopala Rao and Mathematics under P Ranganathan.
- 5) **30 June, 1891** - The school was first



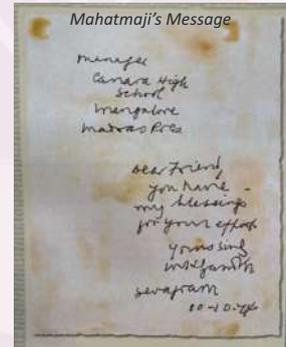
Canara High School, Mangalore

housed in a rented building opposite the Kodialbail Church but was subsequently shifted to its permanent habitation at Dongerkery Road.

- 6) **Mahatma Gandhi** - he laid the foundation stone for Krishna Mandhir on 24.02.1934. The site was donated by Sri. A Upendra Pai, father of Sri. A Subba Rao Pai.



The Mahatma Visits



- 7) **1 July, 1906** - though Canara Hindu Permanent Fund Ltd was formally registered on 1 July 1906, the spadework for the establishment of the Fund had been initiated as early as 1904 and was modeled on the lines of Madurai Hindu permanent Fund.
- 8) **₹30,000** - Deposits were about ₹50,000. The paid up capital rose to ₹2 lakh within the next few years.
- 9) **4** - a secretary, a clerk and two bill collectors.
- 10) **17 July, 1909** - on that day our founder attended to his work in court but soon succumbed to debilitating pain due to severe attack of gout. Around noon on the same he breathed his last.



## “एम्स की यादें – दिल्ली”



अमित कुमार,  
अमिगड, केनरा बैंक

यह एक कहानी नहीं बल्कि मेरे पापा की सच्ची संघर्ष गाथा है, जिसे पढ़कर किसी भी इंसान में मौत से हिम्मत ना हारने का जज्बा जागृत हो सकता है।

इस कहानी की शुरुआत "रूबन अस्पताल" पटना से हुई और अंत भी इसी अस्पताल से हुई। करीब, जनवरी 2014 में पहली बार पापा को सीने में दर्द की शिकायत होने पर उन्हें रूबन अस्पताल में दिखाया गया था। उस समय वो बिना किसी जांच कराए मात्र दवा लेकर घर चले गए थे। उसके बाद फिर करीब एक साल बाद मार्च 2015 में फिर से बहुत जोर सीने में दर्द हुआ जिसके कारण उन्हें तुरंत पटना के "जीवक हर्ट अस्पताल" में भर्ती कराया गया जहां पर "एंजियोग्राफी टेस्ट" करने के बाद पता चला कि पापा को "हर्ट अटैक" आया है और उनकी "बाईपास सर्जरी" करानी पड़ेगी। एक सप्ताह तक पापा उसी अस्पताल में भर्ती रहे और डॉक्टरों की निगरानी में रहे। साथ ही साथ हमलोगों के परिवार में भी विचार-विमर्श हो रहा था कि "बाईपास सर्जरी" कहां पर करवाना बेहतर होगा। अंत में, परिवार, दोस्तों और पापा से विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि पापा का ऑपरेशन "दिल्ली एम्स" में कराया जाएगा। चूंकि उस समय मैं जॉब की तैयारी करता था तो मेरे पास सहायता करने के

लिए पैसे नहीं थे परन्तु मैं समय देकर और पापा के साथ दिल्ली जाकर उनकी हर संभव सेवा करने के लिए तैयार था।

\* "दिल्ली – एम्स":– यह घटना है आज से करीब 5 साल पहले अप्रैल 2015 की जब मैं, पापा, मेरे बड़े भाई और उनके एक मित्र दिल्ली एम्स अस्पताल के लिए खाना हो गए। मैंने भी सिर्फ नाम सुना था कि "दिल्ली एम्स" भारत की सर्वोत्तम मेडिकल संस्थान है, जहां पर सभी तरह के इलाज होते हैं और सभी जगह से लोग आते हैं। इसलिए मेरी भी बहुत उत्सुकता थी कि दिल्ली एम्स को देख सकूँ और अपने पापा की सफल इलाज करवा सकूँ। अगले दिन सुबह करीब 10 बजे हमलोग दिल्ली एम्स में पहुंच गए। ओपीडी का रसीद कटवाया और प्रतीक्षा कक्ष में अपनी पारी का इंतज़ार करने लगे। इतनी भीड़ और लंबी – लंबी लाइनें आज तक हमलोगों ने किसी भी अस्पताल में नहीं देखी थी। मैं खुद इतनी भीड़ देखकर अचंभित और घबरा सा गया था। पापा भी इतनी भीड़ देखकर बहुत घबरा और डर से गए थे कि कैसे यहां इलाज होगा, कैसे यहां ऑपरेशन होगा। किसी भी तरह हम लोगों ने पापा को ओपीडी में दिखाया, डॉक्टर ने कहा कि पापा का हर्ट ब्लॉक हो गया है और इनको हार्ट अटैक आया था जिसके लिए इनका हर्ट का बाईपास सर्जरी करना होगा। फिर उन्होंने ऑपरेशन के लिए एक सप्ताह बाद बुलाया। हमलोग दवा लेकर पापा के साथ होटल वापस आ गए। फिर पापा थोड़ा सा खाना खाए, दवा खाए और लेट गए। वो बहुत डरे और सहमे हुए थे और छाती पर हाथ रखकर सोच रहे थे, सो नहीं पा रहे थे। मैंने उन्हें हिम्मत बंधाई और आराम करने के लिए कहा, वो थोड़ा देर सो गए। फिर अचानक से रात में करीब 11 बजे उन्हें छाती में तेज दर्द होने लगा, सांस लेने में दिक्कत होने लगी। मैंने तुरंत यह बात भैया और उनके मित्र अशोक जी को बताई।

फिर हमलोग तुरंत उसी वक्त टैक्सी से एम्स अस्पताल के





'इमर्जेंसी वार्ड' में चले गए। वहां हमलोग डॉक्टरों को सुबह से रात तक की सारी घटना के बारे में बताए। उन्होंने कुछ जांच - पड़ताल की पापा के शरीर की और फिर उनको जल्दी से एडमिट करने के लिए कहा। हमलोग वहां से स्ट्रेचर पर पापा को अंदर 'जनरल वार्ड' में एडमिट करने के लिए ले जा रहे थे, वहां पर भी गेट पर भारी भीड़ थी। स्ट्रेचर पर भी रोगियों की लंबी लाइनें लगी हुई थी, गार्ड एक-एक करके सभी को अंदर जाने दे रहा था। इसी बीच थोड़ी देर में ही लाइन में ही पापा की सांसे रुकने लगी, उनको सीना में बहुत तेज दर्द होने लगा, पूरा शरीर ठंडा हो गया। मैंने यह बात तुरंत गार्ड को बताया तो गार्ड ने तुरंत डॉक्टर को बुलाया, तब तक पापा की आंखें बंद हो चुकी थी। डॉक्टर ने तुरंत पापा को अंदर ले जाकर बेड पर लेटा दिया। हमलोगों को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि पापा को अचानक से क्या हो गया है? डॉक्टर ने बताया कि पापा को फिर से दूसरा "हर्ट अटैक" आया है और इनकी हर्ट बीट पूरी तरह से रुक चुकी है। उन्होंने तुरंत पापा के शर्ट को निकाला और छाती पर दोनों हाथों से जोर-जोर से प्रेस करने लगे। फिर इनको 4-5 "इलेक्ट्रिक शॉक (इलेक्ट्रिक आयरन)" से दिए, फिर भी कुछ सुधार नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने एक फार्म पर मेरे हस्ताक्षर लिए और बोले कि इनकी जान भी जा सकती है क्योंकि इनको और 4-5 शॉक देना पड़ेगा। मैंने तुरंत हामी भर दी और फिर से पापा को 4-5 इलेक्ट्रिक शॉक छाती पर दिए गए। ऐसा मैंने सिर्फ फिल्मों में देखा था। फिर एक बड़ी नीडल वाली इंजेक्शन उनके गर्दन के नस में देकर दवाई देनी शुरू की गई। पापा की दोनों आंखें पूरी तरह से फटी हुई थी। कुछ भी सुधार नहीं हो रहा था। 5-6 डॉक्टरों की टीम पूरी तरह से पापा की जान बचाने की कोशिश कर रहे थे पर हर्ट बिट बिल्कुल ज़ीरो थी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद डॉक्टरों ने उनको बहुत सारी दवा उस कैनुला के माध्यम से दे रहे थे। साथ ही साथ छाती में भी बहुत सारा इंजेक्शन डायरेक्ट दे रहे थे। फिर कुछ सीनियर डॉक्टरों ने हमलोगों के पास आकर कहा कि पापा के बचने की गुंजाइश बहुत कम है। आप अपने घर वालों को अगर बताना चाहते हैं तो बता दीजिए। हम सभी के आंखों में आंसू आ गए, भैया को तो पूरा सदमा सा लग गया क्योंकि भैया पापा के हमेशा बहुत करीब रहे थे। परन्तु हमलोग हिम्मत नहीं हारे और घर वालों को कुछ नहीं बताया। उन्हीं डॉक्टरों में एक मेडिकल छात्र "डॉक्टर शशांक" थे जो

रात भर पापा को समय-समय पर दवा और इंजेक्शन देते रहे और निरंतर निगरानी करते रहे। हमलोग भी रात भर वहीं पापा के पास खड़े रहे और भगवान से दुआ करते रहे कि एक नई सुबह एक अच्छी खबर लेकर आए। करीब 4 बजे सुबह उनकी हर्ट बिट थोड़ी सी (5-10 प्वाइंट) आ गई। मैंने तुरंत डॉक्टर शशांक को बुलाया, उन्होंने बोला की अभी हालत थोड़ी सी स्थिर हुई है। एक-दो डोज और उन्होंने पापा को दिया। फिर भी हमलोग बहुत डरे हुए और घबराए हुए थे। अगले दिन सुबह करीब 9 बजे राउंड पर कुछ सीनियर डॉक्टरों आए, उन्होंने पापा को देखा फिर उनकी रिपोर्ट देखी और कहा कि अभी स्थिति सामान्य है। साथ ही साथ यह भी कहा कि "आपके पापा ने हिम्मत नहीं हारी और अंदर से उनके जीने की लालसा और जज़्बे ने और डॉक्टर शशांक के अथक प्रयासों ने उन्हें फिर से एक नया जीवन प्रदान किया है। इतना सब सुनने के बाद हम लोगों को थोड़ी तसल्ली हुई और हिम्मत मिली। हमलोग तहे दिल से डॉक्टर शशांक के शुक्रगुजार थे। लोग सच बोलते हैं कि, डॉक्टर भगवान का रूप होते हैं।"

इतना सब होने के बाद भी पापा की आंखें नहीं खुली थी। बस उनका दिल धड़कना शुरू हुआ था। एक दिन और हमलोग उसी जगह पापा के पास खड़े रहे कि कब इनको होश आए और हमलोग उनसे बात कर सकें। फिर अगले दिन सुबह करीब 5 बजे पापा को होश आ गया। उन्होंने आंखें खोली और हमलोगों से आंखों-आंखों से इशारे में बात की। हम लोगों के खुशी का ठिकाना ना रहा, लगा मानो कोई खोया हुआ 'कोहिनूर हीरा' वापस मिल गया हो। अब जाकर हम लोगों के सांसों में सांस आयी। फिर इसके बाद पापा को "आईसीयू" में शिफ्ट करने की प्रक्रिया शुरू हुई। जगह खाली ना होने के कारण दोपहर करीब 2 बजे पापा को आईसीयू में शिफ्ट किया गया। करीब दस दिनों तक पापा को आईसीयू में ही रखा गया। प्रतिदिन उन्हें नाक की नली के माध्यम से सिर्फ दूध और पानी दिया जाता था।

प्रतिदिन रात में हम में से कोई एक पापा के साथ ही आईसीयू में सोते थे ताकि उनकी देख-रेख कर सके। 10 दिनों के बाद वो कुछ-कुछ बोलने लगे, उनकी हालत में काफी सुधार हुआ। इसके बाद पापा को जनरल वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया। यहां



पर वो हल्का हल्का द्रवित भोजन जैसे – खिचड़ी, दलिया, दूध इत्यादि लेने लगे और प्रतिदिन सीनियर डॉक्टर्स की देख रेख में उनका इलाज होने लगा। अब इनकी हालत पहले से बहुत बेहतर थी, अब वो चल-फिर भी सकते थे। इसके बाद डॉक्टर ने हम लोगों को बताया कि ऑपरेशन में अब करीब-करीब एक महीना का समय लग सकता है, जिसके कारण हमलोग एम्स के ही एक "धर्मशाला" में रुक गए, जहां सिर्फ एम्स के मरीजों के परिजनों को ही रुकने की अनुमति थी। हम लोग वहां एक कमरा एक महीने के लिए मात्र 500 रुपए में ले लिए। चूंकि उस समय मेरे पास कोई जॉब नहीं था तो मेरे पास आर्थिक तंगी थी। उसी धर्मशाला में हम लोगों को मात्र 5 रुपए के "रात्रि भोजन पास" पर रात में एक समय सादा भोजन का भी प्रावधान था। हम लोग रात में उसी पास पर खाना खाते थे। वहां पर भी लोगों की लंबी-लंबी लाइनें लगी रहती थी, परन्तु खाना गरम-गरम, साफ़-सुथरा और अच्छा मिलता था। कभी-कभी मैं अस्पताल के गेट के पास ट्रस्ट के द्वारा चलाए जाने वाले "मुफ्त खाने" की लाइन में लग कर भी खा लिया करता था। बहुत मुश्किल घड़ी थी हम सब के लिए। इसी बीच एक सप्ताह के भीतर हमारे एक और बड़े भाई "राजीव कुमार" जो कि "उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक" में "सहायक प्रबंधक" हैं वो भी "लॉस ऑफ पे" पर एक महीना की छुट्टी लेकर दिल्ली आ गए जिससे कि हम लोग का हौसला और हिम्मत और बढ़ गया, साथ ही साथ पारिवारिक और आर्थिक सहायता भी बढ़ गई।

फिर करीब और 10 दिनों के बाद डॉक्टर्स ने पापा को "बाईपास सर्जरी" करने के लिए विचार-विमर्श किया तथा हम लोगों को 6 यूनिट ब्लड का इंतज़ाम और 80000/- का डीडी बनाने को कहा। हम लोग थोड़ा खुश हुए कि आखिरकार करीब 20 दिन के बाद पापा का ऑपरेशन किया जाएगा और पापा पूरी तरह से स्वस्थ हो जाएंगे। मैंने और भैया ने तुरंत अपने दिल्ली के दोस्तों को फोन लगाया ताकि वो लोग ब्लड डोनेट कर सकें। अगले दिन तक हमलोग 6 यूनिट ब्लड का इंतज़ाम और 80000/- का डीडी तैयार कर लिए थे। हम लोगों ने डॉक्टर्स को इस बारे में अवगत करा दिया था। चूंकि पापा को "हाई ब्लड शुगर (डायबिटीज)" की समस्या थी तो डॉक्टर्स ने विचार-विमर्श कर के ऑपरेशन को और एक

सप्ताह के लिए टाल दिया। रोज-रोज वो लोग फिर ऐसे ही बहाना बनाकर ऑपरेशन को टालते गए और सच्चाई को नहीं बता रहे थे कि ऑपरेशन क्यों नहीं कर रहे हैं। हम लोग 10 दिन बाद अपना धैर्य पूरी तरह से खो चुके थे और हिम्मत भी हारने लगे थे। फिर हम लोग एम्स के निर्देशक "डॉक्टर तलवार" से जाकर मिले। उन्होंने हमें सच्चाई बतलाई कि पापा का 60% हर्ट डैमेज हो चुका है और उनको हाई सुगर होने के कारण अगर ऑपरेशन किया भी गया तो उनकी तत्काल मृत्यु हो जाएगी। उन्होंने समझाया कि पापा अभी 5-6 महीने और जीवित रह सकते हैं। और अब ऑपरेशन कभी भी संभव नहीं है, इसलिए इनको घर पे ले जाइए और परिवार के साथ अंतिम समय खुशी-खुशी बिताने दीजिए। डॉक्टर्स की सलाह के बाद हम लोगों ने पापा को अगले दिन तत्काल टिकट लेकर मई, 2015 के प्रथम सप्ताह में "राजधानी एक्सप्रेस" ट्रेन से पटना ले आए।

जब पापा डिस्चार्ज हुए तो उनके चेहरे पर एक अलग ही चमक और मुस्कान थी। वो स्टेशन पर बहुत खुश और अति उत्साहित नजर आ रहे थे, मानो कोई जंग जीत कर घर जा रहे हों। शायद अंदर ही अंदर उन्हें भी पता था कि उनका ऑपरेशन नहीं हुआ है। परन्तु एक महीने के बाद अपने परिवार से मिलने की खुशी ज्यादा मायने रखती थी। पापा करीब 6 महीने तक और हम लोगों के साथ घर पर अच्छा समय व्यतीत किए और अचानक से 12.10.2015 (सोमवार) की रात में उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई। हम लोग तुरंत उनको "रूबन अस्पताल पटना" ले गए जहां अगले दिन 13.10.2015 (मंगलवार) की रात में उनका देहांत हो गया। इस तरह से मेरे पापा (एक योद्धा) के जीवन के संघर्ष का पूर्ण अंत हो गया। आज भी मैं उन पलों को याद कर के बहुत दुखी हो जाता हूं। उनकी बहुत याद आती है और हां, एक पिता की जगह कोई नहीं ले सकता है। काश, पापा आज जीवित होते, हमारे साथ होते। इसलिए कभी भी अपने माता-पिता की सेवा ऐसी घड़ी में तन-मन-धन से जरूर करें, क्या पता आपको फिर ऐसा मौका दुबारा ना मिले और आपको जिंदगी भर पछतावा हो।





**Shreyas, in homage to Canbank's departed souls,  
pray that they rest in bliss, in the eternal palace.**

**Death, said Milton, is the golden key  
that opens the palace of eternity.**

Name	Staff No	Designation	Branch	Expired on
GEETA KAUL	461139	ASST MANAGER	DELHI DHAULAKUAN	28-06-2020
SRIKANTIAH N APPAYANNA	66067	SWO-A	BENGALURU KALIDASA LAYOUT	03-08-2020
ABHISHEK K L	117080	AEO	MANANTHAVADY	09-08-2020
M SIVA NAGA RAJU	45925	SWO-A	TENALI	16-08-2020
SRINIVASA A	76980	DRIVER CUM PEON	HEAD OFFICE BENGALURU	19-08-2020
KARAN BHIR SINGH	54097	SWO-A	RADAUR	20-08-2020
R K KERKETTA	42609	MANAGER	KANPUR DARSHANAPUR	26-08-2020
VINOD KUMAR	65784	SWO-A	JALANDHAR REGIONAL OFFICE	26-08-2020
PRAMOD KUMAR	559382	ATTENDER	AGRA BALUGANJ	30-08-2020
KUMMARI MAHANTESHA	679606	CLERK	KARATAGI	02-09-2020
M A SANTANI	34743	OFFICER	KALYAN CUR CHEST	07-09-2020
PARAMESHWARAPPA C YETTINAHALLI	49443	OFFICER	HIREKERUR	09-09-2020
DEVENDRA DAYAL CHAWAN	60923	SENIOR MANAGER	ZI DELHI UNIT : JODHPUR	10-09-2020
RAJ KUMAR	80994	HKP	GURGAON SECTOR 10A	11-09-2020
BALJIT SINGH	78380	OFFICER	MUKUNDPUR N R I	13-09-2020
GUNAPAL DUGGAPPA SHETTY	407366	ATTENDER	MUNIYAL	13-09-2020
JAGANNATH	37305	DAFTARY	KALABURGI REGIONAL OFFICE	14-09-2020
CHANDRA PRAKASH	46427	SPECIAL ASSISTANT	MORADABAD SUPER BAZAAR MAIN	17-09-2020
CHAMAN LAL	60246	SWO-A	SUJANPUR TIHRA	17-09-2020
BHAJJURAM	592640	ATTENDER	CHIRAGPALLE	18-09-2020
AMBRISH V DAVE	431334	CLERK	WADHWAN	19-09-2020
RADHEY SHAM BHATIA	50663	SWO-A	PANIPAT ASSANDH ROAD	20-09-2020
ANIL MINZ	67575	SWO-A	KATHAL MORE	21-09-2020
HARISHCHANDRA J PAWAR	372796	SENIOR MANAGER	AHMEDABAD C.O	22-09-2020
PANDURANG S DEVATAR	66040	DAFTARY	BENGALURU UTTARAHALLI	23-09-2020
DURGA BAI K	72865	PEON	BENGALURU C.O	23-09-2020



**Shreyas, in homage to Canbank's departed souls,  
pray that they rest in bliss, in the eternal palace.**

**Death, said Milton, is the golden key  
that opens the palace of eternity.**

Name	Staff No	Designation	Branch	Expired on
JILLELLA GURU MAHESH	108285	SWO-A	GOA OLDGOA	23-09-2020
K RISHIKESAN	52573	MANAGER	CHENNAI TN POLLUTION CONTROL BOARD GUINDY	24-09-2020
HITESH KUMAR NAYAK	112668	OFFICER	SIDHPUR	25-09-2020
SURESH L D	64977	D M	DHARMAPURI	26-09-2020
SHRI PRATAP AKARAM GHOLAP	73623	ARMED GUARD	KARAD	27-09-2020
PRABHAT KUMAR THAKUR	77765	MANAGER	DARBHANGA	28-09-2020
SANJAY MUKUND PATOLE	577744	CLERK	BHIWANDI	28-09-2020
P VENKATESH	60155	SWO-B	HEAD OFFICE BENGALURU	30-09-2020
NARAYANA NAIK A	33257	CHIEF MANAGER	BENGALURU SHESHADRI PURAM	02-10-2020
PRASANNA A BAKHLE	508795	SENIOR MANAGER	C I B M MANIPAL , L&D VERTICAL	02-10-2020
NAGARAJ N	41080	DAFTARY	MELUR HARAGATCHI	02-10-2020
SUMITA PAUL	490490	SENIOR MANAGER	CHAKDAULAT	03-10-2020
SUDHIR SAXENA	64618	OFFICER	BAREILLY REGIONAL OFFICE	04-10-2020
LAKSHMANA	71669	SWO-A	Y N HOSKOTE	04-10-2020
GAJENDER	550099	ATTENDER	JODHPUR PAL RD LIC CA BRANCH	04-10-2020
NAGESH G	72204	SWO-A	KOLAPPALUR	05-10-2020
PARAMKUSAM MANIKANTA RAJA	615464	MANAGER	SATTI	08-10-2020
H B KRISHNAPPA	56613	SWO-A	BENGALURU RAH RAJAJI NAGAR I BLOCK	08-10-2020
SUNIL DHONDU CHAVAN	74663	SWO-A	GHANSOLI	09-10-2020
MANISH JOHRI	81363	MANAGER	KUNDOL	11-10-2020
MADHUKAR R GAIKWAD	75804	SWO-A	VADA	12-10-2020
C KRISHNAN	100186	HKP	GANGAPURAM	12-10-2020
ABHISHEK RAVINDRA PAWAR	688918	MANAGER	BELGAUM GOAVES	15-10-2020
DHARMALINGAM R	61028	MANAGER	TIRUPPUR DHARAPURAM ROAD MAIN	19-10-2020
PARAMESWARAN K	52936	SPECIAL ASSISTANT	TRICHY TEPPAKULAM MAIN	23-10-2020
VIGNESWARAN S	121875	SWO-A	KOLAKKANATHAM	31-10-2020

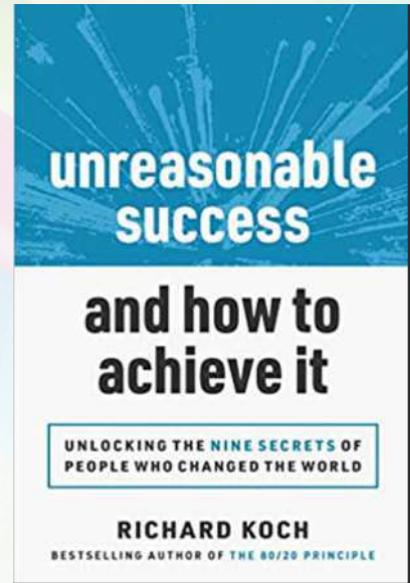
# Unreasonable success and how to achieve it

— Richard Koch

Sometimes we find seemingly very ordinary people achieve surprising results. How did they achieve it? What can be learned from them? The best selling author of the book 80/20 principle Richard Koch takes the readers for a Roller coaster ride and charts a map of success, identifying the nine key attitudes and strategies that can propel anyone to new heights of accomplishment.

Self-belief can start with a vague but deep sense of being special. It can only flourish if tried to a specific goal. He says self-doubt is also useful to prompt drive for personal success.

Other's positive expectations, Richard calls it as Olympian expectation, can make us perform outstandingly well. If we expect to succeed, we likely will do it. Steve Jobs, co-founder of Apple Inc. craved perfection in his products. His level of expectation was enormously high. The author instigates the readers to set the expectation as high as you possibly can, consistent with believing that they can be realised. If you want unreasonable success, you must have unreasonable expectations.



Transforming experiences is the second landmark given by the author for unreasonable, success. Unique personal transformation of many successful people in the world are explored in the section. There was something unique with them. They did not follow the conventional path because it will not lead to unreasonable success. By learning the experience of the successful persons, you can plot a transforming experience, which can catapult to unreasonable success.

One breakthrough achievement was the key to most successful people. They invented something, a radical or revolutionary idea or objective and knew how to carry it to fruition. To be unreasonably successful you need your own philosophy and deeply grounded beliefs, you need authentic and unique convictions before the world will take serious note of you.

Make your own trail, and find and drive your personal vehicle. Richard Koch gives very exciting ideas of two vehicles in one of the chapters; they are pool vehicle and personal vehicle. The successful business leaders like Bill Bain, Jeff Bezos, Walt Disney, Steve Jobs, and Helena Rubinstein had their own personal vehicle to drive towards unreasonable success. The great political leaders like Winston Churchill, Lenin, Nelson Mandela and Margaret Thatcher found their own unique vehicle to stream through and find success.

The author opines that, after any disaster in life, keep going but switch gears. Never give up hope. You cannot know the future, but you must trust it. Failure is the key to future success. Unique intuition is responsible to succeed in life. Moreover, all the great leaders had hugely important intuitions based on knowledge.

Many real life incidents and biographical elements of some of the great personalities, who tremendously triumphed in their mission even with numerous setbacks in life, have been brilliantly elucidated. After completion of the book, one would feel that it has been a voyage touching not only significant aspects in the life of some of the trailblazers but also some of the important political milestones in the history. The author enthralled the reader and sails us through a unique experience.

**Sajeev K**



श्री एम वी राव, कार्यपालक निदेशक द्वारा दिनांक 01.10.2020 को आंचलिक निरीक्षणालय लखनऊ एवं क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ के नए परिसर का उद्घाटन किया गया; श्री देवानंद साहू, महा प्रबंधक और अन्य कार्यपालक भी दिखाई दे रहे हैं।

Sri M V Rao, ED inaugurating the new premises of Zonal Inspectorate Lucknow and new premises of R O, Lucknow-II on 01.10.2020. Sri Debananda Sahoo, GM and other executives are also seen.



दिनांक 12.11.2020 को सीआईबीएम मणिपाल में “नॉलेज बैंक 2020-21 का विमोचन करती हुई सुश्री ए मणिमेखलै, कार्यपालक निदेशक; साथ में श्री रामा नाईक, महा प्रबंधक, राकेश कश्यप, महा प्रबंधक, श्रीमती पी पद्मावती, उप महा प्रबंधक, श्रीमती विमला विजय भास्कर, उप महा प्रबंधक और श्री प्रदीपा रामचंद्रा भक्ता, उप महा प्रबंधक।

Ms. A Manimekhalai, ED releasing “Knowledge Bank 2020-21”, publication of CIBM, Manipal on 12.11.2020 along with Sri Rama Naik, GM, Rakesh Kashyap, GM, Smt. P Padmavathi, DGM, Smt. Vimala Vijaya Bhaskar, DGM and Sri Pradeepa Ramachandra Bhakta, DGM.



Photograph by:



**Sunny Dona. D**  
Officer,  
Pendurthi Branch  
Vijayawada